भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए

MIDHANI

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

ई-पत्रिका अंक 4 | अक्तूबर 2021 - मार्च 2022 | वर्ष 13, अंक 24

सागर की अतल गहराई से, आकाश तलक लहराते हैं।
हम भारत के धातुकर्मी, धातु से सोना बनाते हैं ।।

सत्यमेव जयते

'75वें स्वतंत्रता दिवस' व 'आजादी का अमृत महोत्सव' समारोह पर कथन

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार

आप सभी को 75वें स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत बधाई। आजादी के अमृत महोत्सव का यह वर्ष देशवासियों में नई ऊर्जा और नवचेतना का संचार करे।
जय हिंद!
#IndiaIndependenceDay
सुबह 5:52 बजे · अगस्त 15, 2021· ट्विट्टर

राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री ,भारत सरकार

हमारा उद्देश्य एक शक्तिशाली और आत्मनिर्भर भारत बनाना है जो शांतिप्रिय हो, लेकिन जब भी चुनौती दी जाए तो इसका मुंहतोड़ जवाब देने में पूरी तरह सक्षम हो।
13 अगस्त 2021, शाम 4:08 बजे, पीआईबी दिल्ली

डॉ. अजय कुमार
रक्षा सचिव, रक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

75 वें स्वतंत्रता दिवस समारोह पर वेबसाइट का शुभारंभ करते हुए रक्षा सचिव डॉ. अजय कुमार ने कहा कि इस प्लेटफॉर्म का उद्देश्य जनता के बीच एकजुटता की संस्कृति को आत्मसात करना है ताकि वे इस ऐतिहासिक अवसर का जश्न मना सकें और भारतीय होने की आम पहचान के तहत एकजुट हो सकें ।
03 अगस्त 2021, शाम 5:48 बजे, पीआईबी दिल्ली

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका
वर्ष-13, अंक – 24 अक्तूबर'21 – मार्च'22
ई-पत्रिका अंक 4

संपादक मंडल

संरक्षक
डॉ. संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
श्री एन. गौरी शंकर राव
निदेशक (वित्त)

श्री ए. रामकृष्ण राव
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन व डिजाइनिंग
डॉ. बी. बालाजी
उप प्रबंधक
हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार

संपादन सहयोग
श्रीमती डी. वी. रत्न कुमारी
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

श्री वासुदेव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

अपने लेख व सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:
संपादक, संकल्प
मिश्र धातु निगम लिमिटेड,
कंचनबाग, हैदराबाद- 500058 (ते.रा.)
ई-मेल: b.balaji@midhani-india.in
फोन: 040-24184325
मोबाइल:8500920391, 9154004438

पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नि:शुल्क है।
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

- रक्षामंत्री के उद्घाटन अभिभाषण के मुख्य अंश ...02
- शुभाशंसा ...04
- संपादकीय ...07
- अमृत महोत्सव ...08
- श्रद्धांजलि ...11
- जनसेवा ...11
- कौशल विकास ...12
- प्रतिभागिता ...13
- आत्मनिर्भर भारत ...13
- अतिथि देवो भव: ...14
- उपलब्धियाँ ...15
- वार्ता ...16
- समर्पण ...16
- समारोह ...17
- राजभाषा ...21

सामान्य लेख
- सफलतम व्यक्तियों की सर्वश्रेष्ठ आदतें - राज कुमार साहू ...23
- प्रेरणा की पुंज भारतीय महिलाएँ - वी.के. सुदर्शन ...24

पुस्तक परिचय
- अग्नि के पंखवाला व्यक्ति : डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम - हरीश देवांगन ...29

प्रेरक प्रसंग
- मेरा परिवार मेरा संघर्ष - संदीप पवार ...32

काव्यकुंज
- मैं उनसे कैसे पूछूँ - डॉ. बी. बालाजी ...34
- नाम उसका मिधानि है - निशांक कुमार जैन ...43

कहानी
- कद - दीपक पार्थसारथी ...35

एकांकी
- पोस्ट मास्टर की शादी - प्रतीक शर्मा ...38

चित्र-कथा
- जो न दिखे वह नहीं होता है क्या? ...44

चित्र-दीर्घा
- सतर्कता सप्ताह के दौरान आयोजित पादयात्रा ...45
- स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान आयोजित वृक्षारोपण ...46
- उत्तम कर्मचारी पुरस्कार ...47

पाठकों ने कहा ...48

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री, भारत सरकार

रक्षा मंत्री के उद्घाटन अभिभाषण के मुख्य अंश

तथा उच्च अधिकारियों के कथन

'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत रक्षा उत्पादन विभाग के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों का रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने वर्चुअल रूप से उद्घाटन किया

'पाथ टू प्राइड' वर्चुअल प्रदर्शनी, सार्वजनिक प्रदर्शन, चयनित संग्रहालयों और डीडीपी के 75 संकल्पों को प्रदर्शित करने वाली एक पुस्तिका का शुभारंभ

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाने के लिए 13-19 दिसंबर, 2021 तक रक्षा मंत्रालय के समर्पित सप्ताह के रूप में रक्षा उत्पादन विभाग (डीडीपी) के कई अहम कार्यक्रमों का उद्घाटन किया। रक्षा मंत्री द्वारा एक वर्चुअल प्रदर्शनी, 'पाथ टू प्राइड', सार्वजनिक प्रदर्शनियों, चयनित संग्रहालयों और डीडीपी के 75 प्रस्तावों को प्रदर्शित करने वाली एक पुस्तिका का उद्घाटन/लॉन्च किया गया। सप्ताह भर चलने वाले देशव्यापी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए डीडीपी को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि यह भारत को एक शुद्ध रक्षा आयातक से शुद्ध रक्षा निर्यातक बनाने की दिशा में प्रयासों के बारे में जानकारी फैलाने में मददगार होगा।

अपने संबोधन में श्री राजनाथ सिंह ने देश के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत और अन्य सशस्त्र बलों के जवानों को भी श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने 08 दिसंबर, 2021 को तमिलनाडु में एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में अपनी जान गंवा दी, मंत्री महोदय ने परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा, "जनरल रावत को अभी भी बहुत कुछ करना था। हमारे सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण और रक्षा क्षेत्र में पूर्ण आत्मनिर्भरता उनके दिल के करीब विषय थे। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम लक्ष्य को जल्द से जल्द हासिल करने के लिए अथक प्रयास करें।"

राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ है, इस पर अपना दृष्टिकोण साझा करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा, स्वतंत्रता केवल प्राप्त करने या अर्जित करने की चीज नहीं है, यह बनाए रखने की भी चीज है, जिसके लिए निरंतर प्रयास करना पड़ता है। उन्होंने कहा, "स्वतंत्रता एक लक्ष्य नहीं है, बल्कि एक मार्ग है। एक संप्रभु राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता का अर्थ रक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास से संबंधित कोई भी निर्णय लेने की क्षमता है। किसी भी स्थिति में हम तभी कोई फैसला ले सकते हैं जब हम पूरी तरह से आत्मनिर्भर हों।"

श्री राजनाथ सिंह का विचार था कि स्वतंत्रता के बाद भारत ने कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन रक्षा क्षेत्र की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि 2014 में सरकार के सत्ता में आने से पहले, रक्षा क्षेत्र निवेश, नवाचार और अनुसंधान एवं विकास की कमी के कारण पिछड़ गया था। उन्होंने कहा कि इससे देश की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भरता बढ़ी और रणनीतिक स्वायत्तता प्रभावित हुई। रक्षा मंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार रक्षा में आत्मनिर्भरता के महत्व को समझती है और इस क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' हासिल करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा, "इस सरकार की नीतियों, दूरदर्शिता और मानसिकता के कारण रक्षा क्षेत्र ने एक नए युग में प्रवेश किया है।"

यह कहते हुए कि यह सरकार राष्ट्र हित में साहसिक निर्णय लेने से नहीं कतराती है, रक्षा मंत्री ने रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई नीतिगत सुधारों को सूचीबद्ध किया। उन्होंने आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) के निगमीकरण का

विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि यह कदम ओएफबी को अधिक प्रभावी और कुशल बनाएगा और इसकी वास्तविक क्षमता को उजागर करेगा। रक्षा मंत्री द्वारा उल्लिखित अन्य सुधारों में उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में रक्षा औद्योगिक गलियारों की स्थापना; कतिपय परिस्थितियों में एफडीआई सीमा को स्वचालित मार्ग से 74 प्रतिशत और सरकारी मार्ग से 100 प्रतिशत तक बढ़ाना; रक्षा उत्पादन और निर्यात संवर्धन नीति 2020 के मसौदे का अनावरण; 200 से अधिक वस्तुओं की दो सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियों को अधिसूचित करना; घरेलू उद्योगों से खरीद और इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सीलेंस (आई-डीईएक्स) पहल के शुभारंभ के लिए 2021-22 के पूंजी अधिग्रहण बजट के तहत अपने आधुनिकीकरण कोष का लगभग 64 प्रतिशत तय करना शामिल है।

श्री राजनाथ सिंह ने इस तथ्य की सराहना की कि निजी क्षेत्र ने देश के रक्षा निर्यात में लगभग 90 प्रतिशत का योगदान दिया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सरकार और निजी क्षेत्र के बीच यह सक्रिय और निरंतर साझेदारी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कल्पना के अनुसार 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' को जल्द ही हासिल करने में मदद करेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम लोगों में रक्षा क्षेत्र में हुई प्रगति के बारे में जागरूकता पैदा करेंगे, राष्ट्रीय भावना पैदा करेंगे और देश की रक्षा तैयारियों में उनके विश्वास को और मजबूत करेंगे।

रक्षा सचिव डॉ अजय कुमार ने कहा, सप्ताह भर चलने वाले आयोजन लोगों को डीडीपी की उपलब्धियों, संकल्प और दूरदर्शिता से अवगत कराएंगे। उन्होंने 'आत्मनिर्भर भारत' हासिल करने के लिए बिना किसी समझौते के आगे बढ़ते रहने के संकल्प को दोहराया।

डेफ-एक्सपो-2022 तक और भारत और विदेशों में अधिक लोगों तक पहुंचने के उद्देश्य से थल, नौसेना, वायु, मिसाइल और इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों के क्षेत्रों में विकास और विकास की 75 कहानियों के ज़रिए 'पाथ टू प्राइड' नामक एक वर्चुअल प्रदर्शनी 'आत्मनिर्भर' रक्षा निर्माण के लिए 75 वर्षों की यात्रा को प्रदर्शित करने के लिए शुरू की गई थी। यह वर्चुअल इंटरएक्टिव प्लेटफॉर्म भारत की रक्षा क्षमताओं, स्वदेशीकरण के प्रयासों, भविष्य की तैयारी और नीतिगत सुधारों का भंडार प्रदान करता है, जिससे वैश्विक रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में भारत का उदय होता है।

इस प्रदर्शनी में सात दिनों के लिए वर्चुअल कार्यक्रम हैं, जिनमें सात पी हैं - प्रतिज्ञा, प्रारंभ, प्रतिष्ठान, परिवर्तन, पराक्रम, प्रोत्साहन और प्रयास शामिल हैं - जिन्हें सरकार, निर्माताओं, नवप्रवर्तनकर्ताओं और जनता से संबंधित हितधारकों को शामिल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

देश भर में 75 स्थानों पर रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू), गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए) और वैमानिकी गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीएक्यूए) द्वारा आयोजित सार्वजनिक प्रदर्शनियों का उद्घाटन भी विकास की यात्रा को प्रदर्शित करते हुए वर्चुअल मोड के माध्यम से किया गया। देश में रक्षा निर्माण के सप्ताह के दौरान इन प्रदर्शनियों में स्वदेशी मार्की रक्षा उत्पादों की एक श्रृंखला प्रदर्शित की जाएगी। प्रदर्शनी आम जनता को आधुनिक रक्षा हथियारों, गोला-बारूद और अन्य उपकरणों की एक झलक और इससे कहीं बढ़कर, राष्ट्रवाद की गर्व की भावना का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगी।

बंगलौर, मुंबई, कोलकाता, पुणे, अवादी-चेन्नई और गोवा में क्यूरेटेड संग्रहालयों का भी वर्चुअल मोड के माध्यम से उद्घाटन किया गया, जिसका उद्देश्य जनता को सूचित करना, शिक्षित करना और प्रेरित करना था। 15 अगस्त, 2022 तक राष्ट्र के प्रति 75 प्रतिबद्धताओं को पूरा करने वाली एक पुस्तिका का भी अनावरण किया गया। प्रतिबद्धताओं का उद्देश्य रक्षा विनिर्माण को बढ़ावा देना, दक्षता लाना, व्यापार करने में आसानी की सुविधा प्रदान करना और व्यापक रक्षा उत्पादन बुनियादी ढांचे में नियामक अनुपालन बोझ को कम करना है।

रक्षा राज्य मंत्री श्री अजय भट्ट, थल सेनाध्यक्ष जनरल एमएम नरवने, वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी, नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार, सचिव (पूर्व सैनिक कल्याण) श्री बी आनंद, वित्तीय सलाहकार (रक्षा सेवाएं) श्री संजीव मित्तल और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे। विभिन्न डीपीएसयू सहित 130 से अधिक स्थानों के अधिकारी आभासी तरीक़े से इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

- रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से साभार

डॉ. संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से....

नमस्कार मित्रो,

हिंदी ने वैश्विक पटल पर एक सशक्त भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। हमारे जन प्रतिनिधि अंतरराष्ट्रीय मंचों से हिंदी में अपनी बात रख रहे हैं। जिससे हिंदी वैश्विक स्तर पर अपना एक विशेष स्थान बनाने की ओर अग्रसर है। हिंदी के वैश्विक विकास के इस चरण में हमें भी राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की अपनी संवैधानिक और नैतिक जिम्मेदारी का पालन करना चाहिए।

एक बहुभाषी देश में हिंदी की राजभाषा के रूप में स्वीकार्यता से हमारे तत्कालीन राजनयिकों की दूरदर्शिता का पता चलता है। वे सभी विद्वतजन इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि हिंदी अपनी सहजता और सरलता के कारण राजभाषा के रूप में आसानी से अपना स्थान बना सकती है।

आप सभी को यह बताते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी में कार्यालयी कामकाज को गति प्रदान करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रति वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लगभग सभी लक्ष्यों को मिधानि ने प्राप्त किया है। हम अपने कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए पूरी निष्ठा के साथ प्रयास कर रहे हैं। हमारे कर्मचारी भी राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी सभी योजनाओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए हम मिधानि की छमाही ई-गृह पत्रिका 'संकल्प' का अक्तूबर'21-मार्च'22 अंक प्रकाशित कर रहे हैं। पत्रिका में प्रकाशित गतिविधियाँ मिधानि की प्रगति प्रस्तुत करती हैं। प्रकाशित लेखों से एक ओर जहाँ कर्मचारियों की वैचारिक क्षमता प्रकट होती है वहीं हिंदी में लेखन की श्रीवृद्धि भी होती है। लेख ज्ञानवर्धक हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित इन लेखों से अपना ज्ञानवर्धन अवश्य करें और अपनी प्रतिक्रियाओं से संपादक मंडल को अवश्य अवगत कराएँ। इस अथक प्रयास के लिए संपादक मंडल और सभी लेखकों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

जय हिंद! जय हिंदी!!

संजय कुमार झा

डॉ. संजय कुमार झा

एन गौरी शंकर राव
निदेशक (वित्त)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

निदेशक वित्त की कलम से....

नमस्कार मित्रो,

हिंदी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपनाए हुए सात दशक से अधिक समय हो गया है। राजभाषा के रूप में हिंदी की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि कार्यालयी कामकाज में इसके प्रयोग में निरंतर वृद्धि की जाए और इसके प्रयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाए।

प्राय: यह देखा जाता है कि कार्यालयों में अंग्रेजी के प्रयोग के प्रति आकर्षण के कारण हम हिंदी के प्रयोग को नजरअंदाज करते हैं। ऐसा करना संवैधानिक प्रावधानों की उपेक्षा है। यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम संविधान द्वारा प्रदत्त राजभाषा में अपना कार्यालयी कामकाज करें और निरंतरता बनाए रखें।

मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए समुचित कदम उठाए जा रहे हैं। सभी अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा संबंधी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। उन्हें राजभाषा में कार्यालयी कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रबंधन द्वारा विभिन्न पुरस्कार योजनाएँ भी प्रारंभ की गई हैं। परिणामस्वरूप हिंदी में कामकाज का प्रतिशत निरंतर बढ़ रहा है।

हिंदी लेखन में रूचि रखने वाले कर्मचारियों के सहयोग से हम मिधानि की छमाही ई-गृह पत्रिका 'संकल्प' का नवीनतम अंक प्रकाशित कर रहे हैं। यह हमारे कर्मचारियों का हिंदी के प्रति समर्पण का ही एक उदाहरण है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। इस अंक में मिधानि की विभिन्न गतिविधियों को भी रखा गया है। पत्रिका के सफल संपादन और उत्कृष्ट लेखों के लिए संपादक मंडल और सभी लेखक बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की सफलता के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ।

जय हिंद! जय हिंदी!!

गौरीशंकर

एन. गौरी शंकर राव

ए रामकृष्ण राव
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) की कलम से....

नमस्कार मित्रो,

उद्यम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हो रही वृद्धि हमारे कर्मचारियों के हिंदी के प्रति समर्पण भाव को दर्शाती है। हमारे कर्मचारी राजभाषा कार्यान्वयन में एक सकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। कार्यालयी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के प्रति कर्मचारियों में अनुराग पैदा करने के लिए प्रबंधन की ओर से निरंतर प्रयास जारी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा निर्देशित सभी योजनाओं को उद्यम में लागू किया गया है। कर्मचारी सभी योजनाओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

मिधानि की छमाही गृह पत्रिका 'संकल्प' के प्रकाशन के माध्यम से भी उद्यम में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। 'संकल्प' के प्रकाशन का उद्देश्य मात्र राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार नहीं है अपितु कर्मचारियों में हिंदी लेखन के प्रति रुचि पैदा करना भी है। किसी भी भाषा के प्रसार में पत्रिकाएँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। 'संकल्प' मिधानि के कर्मचारियों में हिंदी भाषा में सृजनशीलता को प्रोत्साहित करते हुए, भाषा पर उनकी पकड़ के साथ-साथ विभिन्न विषयों पर विचार करने की उनकी रचनात्मक क्षमता को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम बन रही है।

इस प्रयास में अपना योगदान देकर अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को समृद्ध करने वाले सभी कर्मचारियों का मैं अभिनंदन करता हूँ। पाठकों से निवेदन है कि वे इस पत्रिका में प्रकाशित सभी ज्ञानवर्धक रचनाओं को पढ़े और अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएँ ताकि हम पत्रिका के आगामी अंकों को बेहतर बना सके। 'संकल्प' के निरंतर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को भी बहुत-बहुत बधाई।

जय हिंद! जय हिंदी!!

ए. रामकृष्ण राव

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है

डॉ. बी. बालाजी
उप प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

भाषा और संस्कृति का चोली दामन का साथ होता है। मानव सभ्यता व संस्कृति के चरणवार विकास की पड़ताल भाषा-विकास की पड़ताल से उद्घाटित हो सकती है। भाषा से ही सांस्कृतिक उपादान संरक्षित व हस्तांतरित होते रहते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी मानव समुदाय की सभ्यता व संस्कृति को जानना और समझना हो तो हमें उस समुदाय की भाषा में लिखित साहित्य का अध्ययन करना होगा। उदाहरण के लिए हिंदी भाषा-साहित्य। हिंदी भाषा का क्रमिक विकास भारतीय जन मानस व उसकी संस्कृति के विकास को प्रकट करता है। इसके प्रमाण हमें हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से मिलते हैं। अत: यह कहना कि भाषा, संस्कृति की संवाहक होती है तो कोई गलत नहीं होना चाहिए।

भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहक होने के कारण भी हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में चुना गया था। राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस और 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। इन समारोह के दौरान संघ सरकार के कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उत्सव धर्मिता मानव सभ्यता और संस्कृति का विशिष्ठ अंग है।

विश्व हिंदी दिवस 2022 के उपलक्ष्य में मिधानि में 10 जनवरी 2022 को 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन में हिंदी का प्रयोग : वर्तमान और भविष्य' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, उ.म.प्र. (राजभाषा), से.नि., यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और भारत के महामहिम राष्ट्रपति के करकमलों से सम्मानित डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा, निदेशक (राजभाषा), से.नि., रेल मंत्रालय, भारत सरकार ने क्रमश: हिंदी के वैश्विक परिदृश्य में तकनीकी लेखन की प्रासंगिकता और विश्व की भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में भारत में राजभाषा की स्थिति विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिए।

संकल्प के अद्य प्रकाशित अंक में कंपनी द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों की सूचनाएँ, लेख, कहानी, कविताएँ तथा एकाँकी प्रकाशित किए गए हैं। कर्मचारियों द्वारा लिखित इन रचनाओं से उनके हिंदी में लेखन के प्रति रुचि तो प्रकट होती ही है साथ ही उनके भाषा कौशल का सहज प्रदर्शन भी होता है। संपादक मंडल की ओर से सभी लेखकों को हिंदी में सामग्री उपलब्ध कराने के लिए आभार। कर्मचारियों से अनुरोध किया जाता है कि वे पत्रिका का यह अंक पढ़ें और अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराएँ। आशा की जाती है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

हिंदी पढ़िए-लिखिए, हिंदी में काम कीजिए-करवाइए।

डॉ. बी. बालाजी

मिधानि के उत्पादों की प्रदर्शनी

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12 मार्च, 2021 को “आज़ादी का अमृत महोत्सव” की शुरुआत की गई। यह भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ अर्थात 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा जबकि 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होंगे। 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के मार्गदर्शन में देश भर में 'अमृत महोत्सव' आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में रक्षा मंत्रालय द्वारा तेरह से उन्नीस दिसंबर 2021 तक 75 स्थानों पर रक्षा संबंधी प्रदर्शनी लगवाने का निर्णय लिया गया। इस उपलक्ष्य में माननीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जी ने रक्षा मंत्रालय के समर्पित सप्ताह 13-19 दिसंबर, 2021 तक में रक्षा उत्पादन विभाग (डीडीपी) के कई अहम कार्यक्रमों का उद्घाटन किया।

भारत सरकार द्वारा घोषित "आज़ादी का अमृत महोत्सव" समारोह के भाग के रूप में और रक्षा मंत्रालय की अगुवाई में मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) द्वारा 13 से 19 दिसंबर, 2021 तक कंचनबाग, हैदराबाद, तेलंगाना तथा रोहतक, हरियाणा में स्थित अपने संयंत्रों में अपने उत्पादों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में मिधानि द्वारा अपनी विकास यात्रा और वर्षों से आत्मनिर्भर भारत में अपने योगदान को प्रदर्शित किया गया। यहाँ देश में रक्षा, अंतरिक्ष और ऊर्जा क्षेत्र जैसे विभिन्न सामरिक कार्यक्रमों के लिए मिधानि की क्षमताओं और विकसित उत्पादों को भी प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शन में अनुसंधान एवं विकास, विनिर्माण प्रक्रियाओं, कच्चे माल और विशेष स्टील, टाइटेनियम मिश्र और सुपर मिश्र की प्रगति में नवाचार शामिल रहे।

मिधानि के उत्पादों की सप्ताह भर चली सार्वजनिक प्रदर्शनी का समापन कार्यक्रम 19 दिसंबर 2021 को मिधानि में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की 'मुख्य अतिथि' तेलंगाना की माननीय राज्यपाल और पुडुचेरी की माननीय उपराज्यपाल, महामहिम डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन रहीं।

मिधानि के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए, माननीय राज्यपाल ने 'आत्मानिर्भर भारत' कार्यक्रम में कंपनी के विभिन्न प्रयासों के लिए मिधानि प्रबंधन को बधाई दी। उन्होंने मिधानि द्वारा किए गए स्वदेशीकरण प्रयासों की प्रशंसा की।

माननीय राज्यपाल ने विदेशी आपूर्ति पर निर्भरता से बचने के लिए अंतरिक्ष, रक्षा और ऊर्जा क्षेत्रों के लिए प्रमुख सामग्रियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मिधानि द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। महामहिम, डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन कहा कि वे पेशे से एक डॉक्टर हैं और इसीलिए वे यह जानकार रोमांचित हुई कि मिधानि द्वारा अपनी नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के तहत ज़रूरतमंदों को जैव-चिकित्सा प्रत्यारोपण की आपूर्ति की जाती है। इस कार्य के लिए उन्होंने तहेदिल से मिधानि की तारीफ की।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. के. झा ने तेलंगाना की माननीय राज्यपाल को निमंत्रण स्वीकार करने और अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर मिधानि आने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता ही भारत के लिए आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है। आत्मनिर्भर भारत, भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की भारत को "वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक बड़ा और अधिक महत्वपूर्ण हिस्सा" बनाने की दृष्टि है। प्रधान मंत्री के अनुसार आत्मनिर्भर बनने के लिए ऐसी नीतियों का पालन करना आवश्यक है जो कुशल, प्रतिस्पर्धी और लचीली हों, और आत्मनिर्भर और आत्म-उत्पादक हों।

उन्होंने आगे कहा कि मिधानि ने अंतरिक्ष, रक्षा और ऊर्जा क्षेत्रों के विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए विशेष धातुओं और मिश्र धातुओं की आपूर्ति की है। कुछ उदाहरणों में जीएसएलवी, पीएसएलवी, चंद्रयान, मंगलयान, गगनयान, हल्के लड़ाकू विमान, कावेरी इंजन, एडवांस अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल प्रोग्राम आदि शामिल हैं।

हैदराबाद और रोहतक, हरियाणा, दो स्थानों पर मिधानि द्वारा आयोजित सार्वजनिक प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। सप्ताह भर चली प्रदर्शनी के दौरान रोहतक में लगभग 5000 लोगों ने प्रदर्शनी का दौरा किया जबकि हैदराबाद में लगभग 15,000 से भी अधिक लोगों की उपस्थिति दर्ज की गई। इस अवसर पर मिधानि द्वारा प्रतिष्ठित संगठनों के प्रख्यात वक्ताओं द्वारा धातुकर्म विषयों पर अतिथि व्याख्यान आयोजित किए गए और विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों के धातु विज्ञान पृष्ठभूमि के छात्रों को इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। इसके अलावा सामान्य स्नातक स्तर के और स्कूल के छात्रों में भी प्रदर्शनी देखने की उत्सुकता दिखाई दी। आम जनता, स्थानीय इंजीनियरिंग / पॉलिटेक्निक / डिग्री कॉलेजों और स्कूली छात्रों को वॉक-इन विज़िट के लिए आमंत्रित किया गया था। 7 दिनों तक चली प्रदर्शनी के दौरान 50 से अधिक कॉलेजों और स्कूलों के छात्रों ने प्रदर्शनी देखी। सप्ताह के दौरान मिधानि की महिला कर्मचारियों के लिए एक विशेष सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें उन्हें धातुकर्म से संबंधित उत्पादन प्रक्रिया की जानकारी दी गई।

हैदराबाद वासियों के लिए एक ही स्थान पर प्रदर्शित होने वाले मार्की रक्षा उत्पादों को देखने का एक अनूठा अवसर रहा। यह रक्षा उत्पादन विभाग (DDP), रक्षा मंत्रालय (MOD), भारत सरकार द्वारा की गई पहल से संभव हो पाया है, जिसमें एक सप्ताह यानी 13-19 दिसंबर को देश भर में विभिन्न स्थानों पर रक्षा उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित किया गया। उल्लेखनीय है कि रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय ने इस दौरान लगभग 75 स्थानों पर प्रदर्शनियाँ आयोजित की और 7 क्यूरेटेड संग्रहालय बनाए गए जिनका उद्घाटन माननीय रक्षा मंत्री, भारत सरकार श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा डीडीपी, रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया।

प्रदर्शनी के समापन कार्यक्रम में निदेशक (वित्त) श्री एन गौरी शंकर राव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान मिधानि के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित इंजीनियरिंग के छात्रों ने प्रदर्शनी के दौरान आयोजित मिधानि के उत्पादों के साथ-साथ मिधानि के उत्पाद संबंधी विषयों पर व्याख्यानों में बड़ी रूचि दिखाई। सप्ताह भर चली प्रदर्शनी में आयोजित व्याख्यान के विषय और विषय विशेषज्ञों का विवरण निम्नानुसार है: (1) टाइटेनियम मिश्र धातुओं का स्वदेशी विकास पर डॉ. अमित भट्टाचार्य, वैज्ञानिक 'जी' ग्रुप हेड, टाइटेनियम एलॉय ग्रुप, डीएमआरएल; (2) टंगस्टन भारी मिश्र धातुओं का प्रसंस्करण पर डॉ. नंदी, वैज्ञानिक 'एच', डीएमआरएल; (3) परमाणु क्षेत्र के लिए सामग्री पर डॉ. कोमल कपूर, ओएस, उप मुख्य कार्यकारी, परमाणु ईंधन समष्टि; (4) निवेश कास्टिंग में उन्नति पर डॉ. दीपक कुमार दास, वैज्ञानिक "एच" (एसोसिएट डायरेक्टर), डीएमआरएल और (5) सैन्य हवाई भंडारों में डीजीएक्यूए की भूमिका और जिम्मेदारियाँ पर डॉ. नीरज चौरसिया, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, आरडीएक्यूए (जीडब्ल्यू एंड एम) ने व्याख्यान दिया। उल्लेखनीय है कि उक्त व्याख्यानों में भाग लेने वाले छात्रों को प्रतिभागिता पुरस्कार भी दिए गए।

जनरल बिपिनसिंह रावत को श्रद्धांजलि

जनरल बिपिन सिंह रावत पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम, वीएसएम, एडीसी (16 मार्च 1958 - 8 दिसंबर 2021) भारत के पहले रक्षा प्रमुख या चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) थे;
उन्होंने 1 जनवरी 2020 को रक्षा प्रमुख के पद का भार ग्रहण किया। इससे पूर्व वो भारतीय थल सेनाध्यक्ष के पद पर 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक रह चुके थे। 8 दिसम्बर 2021 को, एक हैलिकॉप्टर दुर्घटना में, 63 वर्ष की आयु में जनरल रावत का निधन हो गया।

मिधानि प्रबंधन ने जनरल बिपिन रावत, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस), उनकी पत्नी और अन्य कर्मियों के दुर्भाग्यपूर्ण निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

जनरल बिपिन सिंह रावत की सैन्य सेवाएँ:
जनरल रावत ने ग्यारहवीं गोरखा राइफल की पांचवी बटालियन से 1978 में अपने करियर की शुरुआत की थी; जनवरी 1979 में सेना में मिजोरम में प्रथम नियुक्ति पाई; नेफा इलाके में तैनाती के दौरान उन्होंने बटालियन की अगुवाई की; कांगो में संयुक्त राष्ट्र की पीसकीपिंग फोर्स की भी अगुवाई की; 01 सितंबर 2016 को सेना के उप-प्रमुख का पद संभाला; 31 दिसंबर 2016 को सेना प्रमुख का पद; 01 जनवरी 2021 को रक्षा प्रमुख (भारत) का पद।

जनसेवा

स्वचालित पीएसए ऑक्सीजन जेनरेटर प्लांट प्रायोजित

दि. 18.12.2021 को मिधानि ने अपने सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत उस्मानिया जनरल हॉस्पिटल, हैदराबाद को स्वचालित पीएसए ऑक्सीजन जेनरेटर प्लांट प्रायोजित किया। डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि ने श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में संयंत्र का उद्घाटन किया। डॉ. बी. नागेंद्र, अधीक्षक, उस्मानिया जनरल हॉस्पिटल, डॉ. त्रिवेणी, अतिरिक्त अधीक्षक, डॉ. शेषाद्री, सिविल सर्जन-आरएमओ, डॉ. पांडु नाइक, प्रोफेसर व एचओडी, एनेस्थीसिया और अस्पताल की चिकित्सा बिरादरी ने भी उद्घाटन समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज की। उस्मानिया जनरल हॉस्पिटल के डॉक्टरों व चिकित्सा अधिकारियों ने मिधानि की इस पहल के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और जनता के स्वास्थ्य के प्रति मिधानि की प्रतिबद्धता की सराहना की।

प्रवर्तन एवं अभिमुखीकरण कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं विकास विभाग द्वारा 18-21 फरवरी 2022 के बीच (3 दिन) नए नियुक्त कर्मचारी व एफटीसी कर्मचारियों के लिए प्रवर्तन एवं अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और श्री एस. नरसिंह राव, अपर महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं प्रभारी - टी एंड डी ने प्रशिक्षण थीम के लोगो 'परिचय' के विमोचन से कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को कंपनी की उत्पादन प्रक्रिया से अवगत कराया गया।

3 दिवसीय व्यापक कार्यकारी विकास पाठ्यक्रम

01 नवंबर 2021 से 03 नवंबर 2021 तक मिधानि के प्रशिक्षण एवं विकास विभाग ने एनयूएस प्रोन्नत बैच (पायलट बैच) के लिए 3 दिवसीय व्यापक कार्यकारी विकास पाठ्यक्रम (ईडीसी) "लक्ष्य 2021" आयोजित किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न विभागों में तैनात 13 एनयूएस कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के मुख्य विषय – समग्र व्यक्तित्व का विकास, व्यवहारिक और कार्यात्मक मूल दक्षताओं का विकास और टीम वर्क रहा जो उन्हें अपने कार्य स्तर को ऊंचा उठाकर पदोन्नत होने में सहायक हो सके। इस प्रशिक्षण के उद्देश्यों में संचार और सॉफ्ट स्किल्स में कुशल बनाना भी शामिल रहा ताकि कर्मचारी अधिक आत्मविश्वास और दक्षता के साथ विभिन्न पेशेवर चुनौतियों का सामना कर सके। कार्यक्रम के आरंभ में प्रशिक्षण से संबंधित 'लोगो' का विमोचन भी किया गया। 03 नवंबर 2021 को आयोजित प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में डॉ. एस. के. झा, सीएमडी और श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अपने विचार व्यक्त किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संयोजन श्री एस. नरसिंह राव, अ.म.प्र. (प्रशा.) ने किया जबकि संचालन श्री पी. सुनील कुमार, उप प्रबंधक (मा.संसा. एवं प्रशासन) ने किया।

आईटीआई प्रशिक्षुओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम

दि.09.08.2021 को मिधानि द्वारा "भारत की आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आईटीआई प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित "कौशल विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम" का श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) ने उद्घाटन कर प्रतिभागियों को संबोधित किया। मिधानि ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को एक दिवसीय कार्यशाला के रूप में बैचवार आयोजित करने की योजना बनाई है। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को आत्मविश्वास और प्रेरणा का निर्माण, सफलता के लिए बुनियादी आवश्यक / तकनीकी कौशल, व्यवहार और संचार कौशल, रोजगार कौशल, चुनौतियां और अवसर और सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम विषयों की जानकारी दी गई।

डीआरडीएल-डीआरडीओ की कार्यशालाओं में प्रतिभागिता

मिधानि के विभिन्न विभागों के 12-12 अधिकारियों ने 21 अक्टूबर, 2021 तथा 28 अक्टूबर 2021 को डीआरडीएल-डीआरडीओ के "हीरक जयंती समारोह" के अवसर पर डीआरडीएल-डीआरडीओ के एसोसिएट डायरेक्टर (एडमिन) टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट और एचआर डिवीजन द्वारा क्रमशः "प्रोजेक्ट मैनेजमेंट में व्यक्तिगत प्रभावशीलता" और "डीआरडीओ पॉलिसी फॉर प्रोक्योरमेंट एंड प्रोजेक्ट एडमिनिस्ट्रेशन" पर आयोजित कार्यशालाओं में भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री पुरुषोत्तम बेज, ओएस और निदेशक, डीएफएमएम, मुख्यालय डीआरडीओ, डॉ. दशरथ राम यादव, डीएस और निदेशक डीआरडीएल, श्री ए.के.वर्मा एसोसिएट निदेशक (प्रशासन) ने किया।

आत्मनिर्भर भारत

वाईड प्लेट मिल (डब्ल्यूपीएम) से पहली खेप की रवानगी

दि. 05.11.2021 को डॉ. एस.के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदशक, मिधानि और श्री वाई. प्रसाद बाबू, उप सीएमएम (एसडी), आईसीएफ, चेन्नई ने मिधानि की न्यू वाइड प्लेट मिल (डब्ल्यूपीएम) से एलएचबी कोच के लिए इंटीग्रल कोच फैक्ट्री को पहली खेप को रवाना किया। इस अवसर पर डॉ. झा ने कहा कि यह मिधानि के विकास के लिए एक अच्छा संकेत है कि हमारे डब्ल्यूपीएम ने अपनी व्यवसायिक गतिविधियाँ शुरू की हैं। डब्ल्यूपीएम डीआरडीओ, ओएफबी और मिधानि द्वारा वित्त पोषित संयंत्र है।

इस अवसर पर श्री डी. गोपीकृष्ण, महाप्रबंधक (उत्पादन एवं विपणन), श्री डी. अत्च्युतराम, महाप्रबंधक (वाणिज्यिक), श्री पी. शशिधरन, महाप्रबंधक (ईएस), श्री राम रमेश बाबू, महाप्रबंधक (मेल्ट्स), श्री केपीएस मोहनकृष्णा, अपर महाप्रबंधक (स्प्रिंग मिल एवं डब्ल्यूपीएम) ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

पुलिस महानिदेशक, जम्मू-कश्मीर का मिधानि आर्मर यूनिट, रोहतक का दौरा

दि. 02.02.2022 को श्री दिलबाग सिंह, पुलिस महानिदेशक, जम्मू-कश्मीर, ने मिधानि आर्मर यूनिट, रोहतक का दौरा किया और विश्वसनीय आर्मर उत्पादों के उत्पादन की सराहना की। उन्होंने पुलिस बलों की परिचालन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रोहतक में इस तरह की एक महत्वपूर्ण इकाई की स्थापना के लिए मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. के. झा को बधाई दी।

एडवांस मैकेनिकल इंजीनियरिंग कोर्स (OANE-77 PT-II) के अधिकारियों का दौरा

दि. 30.08.2021 को मिलिट्री कॉलेज ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड मैकेनिकल इंजीनियरिंग (एमसीईएमई) सिकंदराबाद से एडवांस मैकेनिकल इंजीनियरिंग कोर्स (OANE-77 PT-II) के अधिकारियों के एक दल ने मिधानि का दौरा किया। उन्होंने मिधानि के कर्नल अश्विनी कुमार, अपर महाप्रबंधक, (डीआरओ), श्री बेउरा बरदा प्रसाद, उ.म.प्र. (बीडी) और कर्नल एन. शेशगिरि राव, वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा) से विभिन्न विनिर्माण उत्पादों, प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रिया पर चर्चा की।

संयुक्त सचिव (पी एंड सी/डीआईपी), रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का दौरा

श्री अनुराग बाजपेयी, संयुक्त सचिव (पी एंड सी/डीआईपी), रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने दि. 26.08.2021 को मिधानि का दौरा किया। उन्होंने मिधानि की चल रही और भविष्य की परियोजनाओं पर डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि और वरिष्ठ प्रबंधन के साथ बैठक की। बैठक के दौरान उन्होंने "आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत रक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला और मिधानि प्रबंधन से आग्रह किया कि सभी कार्यक्रमों में मिधानि की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने नव स्थापित वाइड प्लेट मिल, 8टी वीआईएम और स्प्रिंग मिल का भी दौरा किया। मिधानि की प्रगति की कामना करते हुए संयुक्त सचिव ने मिधानि के नए टाइटेनियम शॉप की भूमि में एक पौधा रोपा।

लेफ्टिनेंट जनरल टीएसए नारायणन, एवीएसएम, कमांडेंट एमसीईएमई, सिकंदराबाद (तेलंगाना) का मिधानि आगमन

लेफ्टिनेंट जनरल टीएसए नारायणन, एवीएसएम, कमांडेंट एमसीईएमई, सिकंदराबाद (तेलंगाना) ने 20.07.2021 को मिधानि का दौरा किया। उन्होंने डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि और श्री एन. गौरी शंकर राव, डी (एफ) के साथ विनिर्माण सुविधाओं और रक्षा अनुप्रयोगों के लिए अनुसंधान एवं विकास के बारे में चर्चा की। महाप्रबंधक (मेल्ट्स) श्री राम रमेश बाबू ने संयंत्र में उत्पादन सुविधाओं की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

उपलब्धियाँ

तेलंगाना राज्य बौद्धिक संपदा पुरस्कार

दि. 8.11.2021 को श्री के.टी. रामा राव, माननीय उद्योग मंत्री, एमए और यूडी, आईटी, ई एंड सी, तेलंगाना सरकार के करकमलों से डॉ. एस. के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि ने "तेलंगाना राज्य बौद्धिक संपदा पुरस्कार" गृहण किया। यह पुस्कार मिधानि को सीआईआई एवं तेलंगाना ग्लोबल लिंकर द्वारा पीएसयू श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ आईपी पोर्टफोलियो के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री के.टी. रामा राव ने मिधानि द्वारा अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पुरस्कार

दि. 14.11.2021 को मिधानि को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मेटल्स द्वारा ऑनलाइन पुरस्कार समारोह में द्वितीय श्रेणी के अंतर्गत "माध्यमिक प्रसंस्करण" के तहत "सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मिधानि की ओर से श्री डी. गोपीकृष्ण, महाप्रबंधक (उत्पादन एवं विपणन) ने ग्रहण किया। मिधानि की ओर से श्री ए. के. शर्मा, अपर महाप्रबंधक (पीपीएम) और अन्य उच्च अधिकारियों ने पुरस्कार समारोह में भाग लिया।

सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम पुरस्कार

24 फरवरी 2022 को "एल एंड डी विजन एंड इनोवेशन समिट अवार्ड्स 2022" के दूसरे संस्करण के पुरस्कार वितरण समारोह में मिधानि के मिड करियर ट्रेनिंग प्रोग्राम (बैच I, II और III) के लिए मिधानि को "ट्रांसफॉर्मेशन फोरम" द्वारा "बेस्ट ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट प्रोग्राम अवार्ड" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि मिधानि के प्रशिक्षण एवं विकास विभाग द्वारा कर्मचारियों के लिए आवश्यकता के अनुसार कौशल विकास को ध्यान में रखकर अभिनव प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

वार्ता

पोश अधिनियम-2013 पर वार्ता

मिधानि के प्रशिक्षण एवं विकास विभाग द्वारा महिला कर्मचारियों के लिए 09 दिसंबर 2021 को कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम पर "पॉश अधिनियम-2013" पर जागरूकता और संवेदीकरण कार्यक्रम पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। सुश्री गीता गोटी, सचिव हैदराबाद नगर सुरक्षा परिषद (एचसीएससी) अतिथि वक्ता रहीं। श्रीमती के. मधुबाला, अ.म.प्र. (प्रभारी वित्त एवं लेखा), अध्यक्ष आंतरिक समिति (पीओएसएच), श्री एस. नरसिंह राव, अ.म.प्र. (प्रशासन), श्री हरि कृष्ण वी., अ.म.प्र. (प्रभारी मा.संसा.) और आंतरिक समिति के सदस्य - पीओएसएच, श्रीमती ए. रश्मि, प्रबंधक (मा.संसा.) और श्रीमती सी. एच. स्रवंति, वरि. प्रबंधक (भंडार) ने अपनी उपस्थित दर्ज की।

समर्पण

तेलुगु गजल वीडियो एलबम जारी

दि. 22.11.2021 को तेलुगु गजल वीडियो एल्बम "नान्नकू अंकितम" का मिधानि के सीएमडी डॉ. एस.के. झा और निदेशक (वित्त) श्री एन. गौरी शंकर राव ने विमोचन किया। वीडियो में स्वर बद्ध ग़ज़लें श्री के. माधव राव द्वारा लिखी गई हैं। वे मिधानि में वरिष्ठ कार्यकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। वे अपने कार्यकाल के दौरान मिधानि के पूर्व अध्यक्ष, एमईए भी रहे हैं। हर्ष का विषय है कि श्री के. माधव राव ने तेलुगु गजलों का अपना वीडियो अलबम मिधानि को समर्पित किया है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

26.10.2021 से 01.11.2021 तक मिधानि में सतर्कता विभाग द्वारा "स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता" विषय पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 का आयोजन किया गया। विशेष संयोग है कि हर साल इस सप्ताह के दौरान 31 अक्तूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्मदिन भी पड़ता है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन की शुरुआत डॉ. एस.के. झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), वरिष्ठ अधिकारीगण और कर्मचारियों द्वारा दिनांक 26.10.2021 को 1100 बजे सतर्कता शपथ से हुई।

सप्ताह के दौरान कोविड -19 महामारी को ध्यान में रखते हुए "स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता" विषय पर कर्मचारियों के लिए "आत्मनिर्भर भारत", "मिधानि खरीद नीति और प्रक्रिया 2020", "भ्रष्टाचार विरोधी अभियान" जैसे विषयों पर विभिन्न प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन मोड में आयोजन किया गया। सीवीसी के निर्देश के अनुरूप, वेंडर मीट और वॉकथॉन आयोजित किए गए।

सप्ताह का समापन 01.11.2021 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के लिए हितधारकों को प्रेरित करने के उद्देशय से एक नाटक "जो ना दिखे वह नहीं होता है क्या" का मंचन किया गया।

समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मदभुशी श्रीधर आचार्युलु, (पूर्व सीआईसी) डीन, स्कूल ऑफ लॉ, महिंद्रा विश्वविद्यालय ने उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित किया। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. श्रीधर आचार्युलु ने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में सतर्कता गतिविधियों के महत्व पर जोर देते हुए विषय पर अपने व्यावहारिक विचार साझा किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. एस.के. झा, सीएमडी, मिधानि ने की। उन्होंने समाज व कार्यालय में सत्यनिष्ठा के निर्वाह पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. झा ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन में सत्यनिष्ठ व्यक्ति कार्यालय में भी सत्यनिष्ठा का पालन करता है। एक आदर्श स्थापित करता है। श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), डॉ. उपेंद्र वेन्नम, आईपीओएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी और मिधानि के वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

कार्यक्रम में सप्ताह भर में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। समापन कार्यक्रम में सतर्कता विभाग, मिधानि की गृह पत्रिका "जागृति" का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस

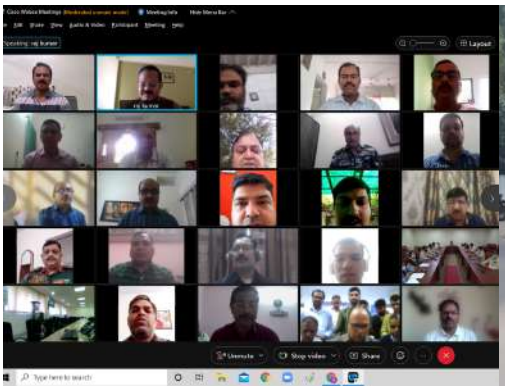

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर 31.10.2021 को मिधानि ने श्री राज कुमार, सचिव (डीपी) के साथ शपथ कार्यक्रम में शामिल होकर और एकता बाइक रैली का आयोजन करके 'भारत के लौह पुरूष' और 'अखंड भारत के निर्माता' सरदार वल्लभ भाई पटेल को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

संविधान दिवस

मिधानि में 26.11.2021 को संविधान दिवस - 2021 के अवसर पर निदेशक (वित्त), श्री एन. गौरी शंकर राव की अध्यक्षता में "भारत का संविधान" विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तेलंगाना और आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री नौमेन सुरपराज कर्लापलेम ने भारत में सुशासन को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संविधान के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने भारत के संविधान निर्माण की प्रक्रिया, मूल अधिकारों, कर्तव्यों आदि से सभी को अवगत कराया। साथ ही, अन्य देशों के संविधानों का भारत के संविधान के साथ तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए हमारे संविधान की मुख्य विशेषताओं की चर्चा की।

मिधानि के निदेशक (वित्त), श्री एन. गौरी शंकर राव ने 'संविधान दिवस' के आयोजन की आवश्यकता की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने सभी कर्मचारियों से आग्रह किया कि समय निकालकर एक बार संविधान अवश्य पढ़ें।

उल्लेखनीय है कि मिधानि की वेबसाइट, सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर उद्देशिका वाचन तथा 'संवैधानिक लोकतंत्र' पर आधारित ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का प्रचार भी किया जा रहा है। कार्यक्रम के आरंभ में अपर महाप्रबंधक (प्रभारी मानव संसाधन), श्री हरिकृष्ण वी. ने मुख्य अतिथि वक्ता का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया और श्री पी. सुनील कुमार, उप प्रबंधक (मा. संसा. एवं प्रशा.) ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। कार्यक्रम में मिधानि के अन्य वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर कर्मचारियों ने संविधान की उद्देशिका का वाचन किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

स्वच्छ भारत पखवाड़ा

मिधानि में 01-15 दिसंबर 2021 तक स्वच्छ भारत पखवाड़ा का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया गया। पखवाड़ा के दौरान फैक्ट्री परिसर और टाउनशिप में सफाई अभियान, स्क्रैप और ई-कचरे का निपटान, पुरानी फाइलों को बंद करना, वृक्षारोपण, कीटनाशकों का धूमन जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

स्वच्छता के प्रति जागरूकता के प्रसार के लिए स्कूली छात्रों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता, मिनी-मैराथन और "पर्यावरण प्रदूषण और उसके प्रबंधन में एक अंतर्दृष्टि" विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 2022 को मिधानि में 73वां गणतंत्र दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. के. झा द्वारा ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान 'जन गण मन' से हुआ। कार्यक्रम में श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), डॉ. उपेंदर वेन्नम, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), सहित मिधानि के अन्य उच्च अधिकारीगणों व कर्मचारीगणों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस अवसर पर श्री मंगलेश कुमार ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया और श्री प्रतीक शर्मा ने सिंथसाइजर पर देशभक्ति धुनों का वादन किया। कार्यक्रम के दौरान कोविड संबंधी दिशानिर्देशों का पालन किया गया। समापन राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' से हुआ।

इस अवसर पर बीपीडीएवी स्कूल के मेधावी छात्रों को प्रमाणपत्र तथा नकद राशि से, मुख्य सतर्कता अधिकारी, डॉ. उपेंदर वेन्नम को मिधानि राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना के अंतर्गत 10,000 रुपए के नकद पुरस्कार से तथा मिधानि में 25 वर्ष की दीर्घ सेवा पूर्ण करने वाले श्री ए. डी. जम्बूलकर, श्री लच्या और श्री नारय्या रमावत को रजत पदक और शॉल से सम्मानित किया। साथ ही वर्ष 2021 में अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को प्रमाणपत्र तथा नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार अलग-अलग श्रेणियों में प्रदान किया गया। इस वर्ष यह पुरस्कार सर्वोत्तम कार्यपालक श्रेणी में श्री सुदीप कुमार दुप्पाडा, श्री सैयद सिराज बाशा और श्री आई. के. चैतन्य, गैर-संघीय पर्यवेक्षक श्रेणी में श्री कांता राव चेलिमिल्ला, गैर-कार्यपालक श्रेणी में श्री अशोक दास और श्री कनकराजू चोदावरपु, सर्वोत्तम महिला कर्मचारी श्रेणी में श्रीमती स्रवंति धारावत, श्रीमती टी. लावण्या और श्रीमती सीएच. दिव्या को प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त 7 ठेका कामगारों को भी प्रमाणपत्र तथा नकद राशि से पुरस्कृत किया गया।

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह

"सुरक्षा संस्कृति के विकास हेतु युवाओं को प्रोत्साहित करें" विषय पर 04-10 मार्च 2022 तक मिधानि की हैदराबाद और रोहतक इकाइयों में आयोजित राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह-2022 का 11.03.2022 को बड़े उत्साह के साथ समापन संपन्न हुआ। अवसर पर श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) और श्री देबाशीष दत्ता, महाप्रबंधक (पीएमओ) ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया और सुरक्षा पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम का संचालन श्री एम. मल्ला रेड्डी, उप प्रबंधक (सुरक्षा, अग्नि एवं पर्यावरण) द्वारा किया गया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

दि. 08.03.2022 को मिधानि ने "पूर्वाग्रह को तोड़ो" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022 समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर मानव संसाधन विभाग ने मिधानि में महिलाओं के कल्याण के उपायों पर इंटरैक्टिव सत्र का और पारस्परिक / अंतर विभागीय संबंधों को मजबूत करने के लिए टीम निर्माण गतिविधियों का आयोजन किया। सभी आयु वर्ग की महिला कर्मचारियों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने बहुमूल्य इनपुट दिए।

गुणता माह

गुणता प्रबंधन विभाग द्वारा वर्ष 2021 के लिए नवंबर 2021 के दौरान 'स्थिरता: हमारे उत्पाद, लोग और ग्रह में सुधार' विषय पर गुणता माह का आयोजन किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री ए.पी.वी.एस. प्रसाद, मुख्य कार्यकारी (सेमिलैक) ने की। इस अवसर पर डॉ. एस. के. झा, सीएमडी, मिधानि, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) मिधानि, श्री अखिलेश पाठक, क्षेत्रीय निदेशक (आरसीएमए) और मिधानि के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस अवसर पर श्री वी. एस. रामगोपाल, एजीएम (प्रभारी गु. प्र. एवं एएमटीएल) ने स्थायी संचालन व व्यवसाय के लिए मिधानि उत्पादों में गुणता के निरंतर सुधार के महत्व पर जोर दिया।

हिंदी कार्यशालाएँ

कार्यालय का काम-काज हिंदी में करने हेतु कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मिधानि के तत्वावधान में प्रतिमाह एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यशालाओं में कर्मचारियों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी व लक्ष्यों की जानकारी दी जाती है। कार्यशाला के सत्रों में अतिथि वक्ताओं द्वारा प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली का दैनिक काम-काज में प्रयोग, व्यावहारिक अनुवाद, आलेखन एवं टिप्पण, मानक हिंदी लिपि और व्यावहारिक व्याकरण आदि विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। कार्यालय के कामकाज के दौरान हिंदी के प्रयोग में आनेवाली कठिनाइयों को हल करने का प्रयास कर भाषा प्रयोग की सरल पद्धतियों पर विस्तृत चर्चा भी की जाती है। हिंदी कार्यशालाओं में प्रयास किया जाता है कि कार्यालय का कामकाज करने के प्रति कर्मचारियों की झिझक दूर की जा सके।

अक्तूबर 2021 से मार्च 2022 तक की छहमाही के दौरान आयोजित कार्यशालाओं से 22 अधिकारी एवं 09 कर्मचारी लाभांवित हुए। इन कार्यशालाओ में श्री काज़िम महमद, सहायक निदेशक (राजभाषा), आरसीआई सहित हिंदी शिक्षण योजना से संबद्ध डॉ. रवीचंद्र, प्राध्यापक तथा श्रीमती बेला, सहायक निदेशक अतिथि व्याख्याता रहे।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला

दिनांक 21.01.2022 को मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा नराकास (उ) के अति लघु सदस्य कार्यालयों के लिए ऑनलाइन संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 17 सदस्य कार्यालयों से 47 कर्मचारियों और मिधानि के 10 उच्च अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। कार्यशाला के प्रथम सत्र में होमनिधि शर्मा, उ.म.प्र, मा. संसा. , राजभाषा, बीडीएल एवं सदस्य सचिव, नराकास (उ) ने भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसके कार्यान्वयन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में अधिकारियों की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला और साथ ही, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजना बनाने की जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में अद्यतन जानकारी भी दी। दूसरे सत्र में मोहम्मद कमालुद्दीन, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, विशाखापट्टणम ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण और इसके प्रयोग की जानकारी दी। उन्होंने सरकारी-कामकाज, आलेखन-टिप्पणी, पत्राचार आदि में पारिभाषिक शब्दावली के अर्थगत प्रयोग को रेखांकित करते हुए इसका ऑनलाइन अभ्यास भी कराया।

विश्व हिंदी दिवस

मिधानि में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10 जनवरी 2022 को 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन में हिंदी का प्रयोग : वर्तमान और भविष्य' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का उदघाटन करते हुए मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. के. झा ने वेबिनार के प्रतिभागियों को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दी और कहा कि हिंदी में तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों पर लेखन से ही हिंदी का सशक्त प्रचार-प्रसार हो सकता है। इस अवसर पर मिधानि के निदेशक (वित्त) एन. गौरी शंकर राव ने कहा कि जब तक विज्ञान व तकनीकी लेखन में हिंदी का प्रयोग नहीं बढ़ेगा तब तक हिंदी को हम सही रूप में राजभाषा का दर्जा नहीं दे पाएँगे। वेबिनार के प्रथम वक्ता लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, उ.म.प्र. (राजभाषा), से.नि., यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने कहा कि वैश्विक संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन धीमी गति में चल रहा है, इसे गति प्रदान करने की आवश्यकता है। तकनीकी लेखन विशेष लेखन का क्षेत्र है। भारत के वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे तकनीकी साहित्य का लेखन हिंदी में करें और उसे विश्व भर में प्रसारित करें। द्वितीय वक्ता भारत के महामहिम राष्ट्रपति से सम्मानित डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा, निदेशक (राजभाषा), से.नि., रेल मंत्रालय, भारत सरकार ने विश्व के विभिन्न देशों में राजभाषा की स्थिति के साथ राजभाषा हिंदी की तुलना की। उन्होंने कहा कि हिंदी में रोजगार के बढ़ने से ही हिंदी की मांग बढ़ेगी। वेबिनार के मार्गदर्शक नराकास (उपक्रम) के सदस्य सचिव श्री होमनिधि शर्मा, उप महाप्रबंधक (मा. संसा.-राजभाषा), बीडीएल ने वेबिनार पर अपनी टिप्पणी करते हुए कहा कि विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर तकनीकी विषयों पर संगोष्ठी करना हिंदी को सुदृढ़ करने का एक सार्थक प्रयास है। इस कार्य के लिए उन्होंने मिधानि प्रबंधन की सराहना की। राष्ट्रीय वेबिनार में देश के विभिन्न शैक्षणिक व तकनीकी संस्थाओं के भाषा प्रेमियों ने सहभागिता की।

सफलतम व्यक्तियों की सर्वश्रेष्ठ आदतें

सफलतम व्यक्तियों की कुछ विशिष्ठ आदतें होती हैं। उनके जीवन की घटनाएँ प्रेरक व दिलचस्प होती हैं। विश्व के सफलतम व्यक्तियों जैसे राइट ब्रदर्स, महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला, मार्क जुकरबर्ग, वारेन बफेट, बिल गेट्स, नारमल बोरलाग आदि के जीवन के बारे में अध्ययन करने के बाद 12 ऐसे गुण पाए गए जो सभी सफलतम व्यक्तियों में कम या अधिक विद्यमान थे। इन्हीं गुणों के कारण ये लोग अत्यधिक सफल हुए। इन गुणों में कोई रॉकेट साइंस नहीं है, दृढ़ निश्चय व लगन के साथ हम भी आसानी से इन्हें अपने दैनिक जीवन में लागू कर सकते हैं और सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं।

राज कुमार साहू
वरि. तक. सहा. (यूटिलिटिज)

सफलतम व्यक्तियों की अत्यधिक सफलता में निम्नलिखित 12 गुणों का महत्वपूर्ण योगदान होता है:

1.सपने देखना: सफल लोग स्वप्नदर्शी होते हैं क्योंकि उनकी सारी उल्लेखनीय सफलताओं और उपलब्धियों की शुरुआत उनके सपने से हुई थी और उनके सपने बड़े होते हैं और वे उन सपनों के बारे में निरंतर कल्पनाशील होते हैं कि कैसे उन सपनों को हासिल करना है। इसके लिए उचित अवसरों का लाभ उठाते हैं तथा उचित कार्य-योजना तैयार करते है।

2. लक्ष्य निर्धारित करना: इस बात में कोई संदेह नहीं है कि कोई व्यक्ति किसी यात्रा की शुरुआत तब तक नहीं करता है जब तक यह मालूम न हो कि उसे जाना कहाँ है? सफल लोग यह जानते हैं कि अपने सपनों को पूरा करने के लिए लक्ष्य बनाना महत्वपूर्ण है। सफल लोग अपनी इच्छाओं और लक्ष्यों की सूची बनाते हैं और उन्हें परिस्थितियों व समय के अनुसार वर्गीकृत करके लक्ष्यों के महत्व के अनुसार प्राथमिकता तय करते हैं तथा समय-समय पर उनकी प्रगति की समीक्षा भी करते हैं।

3.लक्ष्य के प्रति समर्पण: सफल लोग अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरे मन से समर्पित होते हैं। उनकी लगन व समर्पण के कारण उनके अंदर लक्ष्यों के प्रति एक आग होती है जो उन्हें दृढ़ प्रतिज्ञ बनाती हैं। सफल लोग पूर्ण समर्पण के कारण ही शारीरिक कष्ट, विफलताओं, अस्वीकृति और अपमानता की स्थिति का सामना करते हैं, उनसे घबराते नहीं हैं न ही लक्ष्य से पीछे हटते हैं।

4.स्व अनुशासन: सफल लोग आत्मानुशासन को अपने जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बनाते हैं क्योंकि यह उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के काबिल बनाता है। अनुशासन की कमी, विफलता, दुख, हताशा व अपेक्षा कम उपलब्धि का कारण बनती है। सफल लोगों में स्वप्रेरणा, संयम, सुव्यवस्था, ठंड़ा दिमाग व सूझबूझ वाले तथा गलतियों से सीखने की कला, नियमित व्यायाम जैसे गुणों का समावेश होता है।

5.आत्मविश्वास: सफल लोग अपनी क्षमता, कुशलता और सोच पर पूरा भरोसा रखते हैं। वे आलोचनाओं व विफलताओं से हतोत्साहित नहीं होते हैं बल्कि सृजनात्मक होते हैं तथा अपनी भावनाओं व आवेग पर पूरा नियंत्रण रखते हैं।

6. लक्ष्य के प्रति सक्रियता: सफलतम लोग अपने लक्ष्य के प्रति हमेशा सक्रिय रहते हैं और अवसरों का लाभ उठाने के लिए तत्पर रहते हैं। वे समस्याओं का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास करते रहते हैं, जोखिम लेते हैं तथा चुनौतियों से निपटने के लिए कदम उठाते हैं।

7. सकारात्मक सोच: सोच ऐसी पहली विशेषता है जिससे सफल व्यक्ति की पहचान होती है। यदि सोच सकारात्मक है तो समझिए उसने आधी सफलता प्राप्त कर ली है। सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति आशावादी व तनावों से निपटने की क्षमता से भरपूर होते हैं। ऐसे लोग यदि 1000 बार भी असफल हो जाए तो भी इनका कथन होता है कि मैंने 1000 नए तरीके खोजे परंतु वे कारगर साबित नहीं हुए।

8. लक्ष्य के प्रति निरंतर प्रयास: सफल लोगों के बड़े गुणों में से एक है निरंतरता क्योंकि निरंतरता सफलता के लिए आवश्यक व अपरिहार्य है। यह ऐसा गुण है जो कौशल की कमी की भरपाई कर सकता है। असफलताओं से निराश होने के बजाए सफल लोग गलतियों का विश्लेषण करके सफलता के नए मार्ग तराशते हैं। कोई कठिन व बड़ा फैसला लेने से पहले सफल लोगों व अन्य

शेष पृष्ठ 28 पर

प्रेरणा की पुंज भारतीय महिलाएँ

भारतीय इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारत में महिलाओं की स्थिति में कई परिवर्तन आए। कई विदुषी महिलाओं ने भारत सरकार में विभिन्न वरिष्ठ आधिकारिक पदों पर कार्य किया है, जिसमें भारत के राष्ट्रपति, भारत के प्रधान मंत्री, लोकसभा अध्यक्ष शामिल हैं। हालांकि, भारत में कई महिलाओं को अभी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन, अब यह जानकर खुशी होती है कि महिलाएँ शीशे की छत तोड़ने में सफल रही हैं।

वी. के. सुरदर्शन
उप प्रबंधक (एसपीडी)

इस लेख में महान व्यक्तित्व की ऐसी महिलाओं के संबंध में चर्चा की जा रही है जिन्होंने भारतीय पितृसत्तात्मक समाज की सभी बाधाओं को दूर करने के लिए महान दृढ़ संकल्प, साहस दिखाया। दूसरों की बनाई राह पर तो सभी चलते हैं, पर स्वयं का मार्ग बनाकर चलना सबसे कठिन कार्य होता है। भारतीय नारी की मुक्ति और उसे वर्तमान स्तर पर लाने के लिए न जाने कितनी स्त्रियों ने यह जोखिम उठाया है। यह जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है कि कौन थी वे अग्रणी महिलाएँ? यह लेख इस जिज्ञासा का समाधान ही नहीं उन महती विभूतियों के प्रति एक विनम्र श्रद्धांजलि भी है।

यहाँ पर 6 क्षेत्रों [स्वतंत्रता संग्राम, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान, खेल, अन्य (विशेष उपलब्धियां)] का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है, जहाँ 45 महिलाओं ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

पहला क्षेत्र: स्वाधीनता संग्राम

स्वाधीनता संग्राम में सर्वश्रेष्ठ 4 महिलाएँ हैं: कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू, भीकाजी कामा और एनी बेसेंट। भारत के स्वंतंत्रता संग्राम में योगदान के लिए महात्मा गांधी, नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल का नाम खूब लिया जाता है, लेकिन स्वंतंत्रता संग्राम की लड़ाई भारतीय महिलाओं के योगदान के बिना अधूरी है। **कमलादेवी** का स्वंतंत्रता संग्राम में अहम योगदान रहा। ये एक विचारक के तौर पर गांधी या अंबेडकर से कम नहीं थीं। इतिहास के पन्नों में अगली महान महिला **सरोजिनी नायडू** हैं जिन्हें भारत नाइटिंगेल के नाम से जाना जाता है। आजादी के बाद सरोजिनी जी उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल भी बनीं। अगली महान महिला स्वतंत्रता सेनानी **भीकाजी कामा** ने भी आज़ादी के लिए काफी जोर लगाया। भीकाजी कामा विदेश में भारत का झण्डा फहराने वाली पहली महिला थी।

इस क्षेत्र अपने कार्य से नाम कमाने वाली आखिरी लेकिन सबसे अनोखी महिला, **एनी बेसेंट**। वे लंदन में पैदा हुई थीं। किंतु उन्होंने भारत को अपनी कर्म भूमि बनाया। 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष थीं। उन्होंने भारत में फ़ैली कुरीतियों के खिलाफ़ आवाज़ उठाने के लिए ब्रदर्स ऑफ़ सर्विस संस्था की स्थापना की और इसकी मदद से बाल विवाह और जातिवाद जैसे मुद्दों की कड़ी आलोचना की।

कमला देवी

सरोजिनी नायडू

भीकाजी कामा

ऐनी बेसेंट

दूसरा क्षेत्र: राजनीति

राजनीति क्षेत्र से यहाँ 8 प्रमुख महिलाओं की चर्चा की जा रही है। इन महान हस्तियों के नाम हैं: प्रतिभा पाटिल , मीरा कुमार, इंदिरा गांधी, वॉयलेट अल्वा, राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, विजयलक्ष्मी पंडित और डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी। श्रीमती **प्रतिभा पाटिल** का जन्म 19 दिसंबर 1934 को महाराष्ट्र के नंदगांव जिले में हुआ था। उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन बहुत ही कम उम्र मात्र 27 वर्ष में शुरू किया। 25 जुलाई 2007 को श्रीमती प्रतिभा पाटिल भारत गणराज्य की 12वीं राष्ट्रपति बनी । इन्हें भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति होने का गौरव प्राप्त हुआ है। 2009 के आम चुनावों के बाद एक नया इतिहास रचा गया। देश के इतिहास में पहली बार कोई महिला

लोकसभा अध्यक्ष पद पर विराजमान हुई और वह भी निर्विरोध। इस महिला नेता का नाम था श्रीमती **मीरा कुमार**, जो कांग्रेस के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय बाबू जगजीवन राम की सुपुत्री हैं। स्वर्गीय **इंदिरा गांधी** भारत की प्रथम और अब तक की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री रहीं। श्रीमती इंदिरा गांधी शुरू से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहीं। बचपन में उन्होंने 'बाल चरखा संघ' की स्थापना की और असहयोग आंदोलन के दौरान कांग्रेस पार्टी की सहायता के लिए 1930 में बच्चों के सहयोग से 'वानर सेना' का निर्माण किया। विभिन्न विषयों में रुचि रखने वाली श्रीमती गाँधी जीवन को एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखती थीं। उनका मानना था कि कार्य एवं रुचि के विभिन्न पहलू होते है, फिर भी इन्हें अलग नहीं किया जा सकता, न ही अलग-अलग श्रेणियों में ही रखा जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में कई उपलब्धियां प्राप्त की। उन्हें 1972 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। **वॉयलेट अल्वा** जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की राजनीतिज्ञ थी। वे तीन सत्रों तक राज्य सभा की सदस्य रहीं। राज्यसभा की उपसभापति बनने पर वह यह पद संभालने वाली 'पहली महिला' बनीं । अगली अग्रणी महिला **राजकुमारी अमृत कौर** भारत की राजनेता तथा स्वतंत्र भारत की प्रथम स्वास्थ्य मंत्री रहीं। वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा सामाजिक कार्यकर्ता थीं। स्वास्थ्य मंत्री के रूप में, कौर ने नई दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसकी पहली अध्यक्ष बनी। **सुचेता कृपलानी** भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनीतिज्ञ थीं। ये उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री बनीं और भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री थीं। **विजय लक्ष्मी पंडित** भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु की बहन थीं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में विजय लक्ष्मी पंडित ने अपना अमूल्य योगदान दिया। वे केबिनेट मंत्री बनने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं। 1937 में वे संयुक्त प्रांत की प्रांतीय विधानसभा के लिए निर्वाचित हुईं और स्थानीय स्वशासन और सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्री के पद पर नियुक्त की गईं। 1953 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली वह विश्व की पहली महिला थीं। वे राज्यपाल और राजदूत जैसे कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहीं। अंतिम लेकिन सबसे महत्वपूर्ण महिला, डॉक्टर **मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी** लड़कों के स्कूल में प्रवेश लेने वालीं देश की पहली महिला थी। इसके आलावा मुत्तुलक्ष्मी देश की पहली महिला डॉक्टर (मेडिकल ग्रेजुएट) भी थी। मुत्तुलक्ष्मी जीवन भर महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़तीं रहीं और देश की आज़ादी की लड़ाई में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर सहयोग दिया।

प्रतिभा पाटिल

मीरा कुमार

इंदिरा गाँधी

वॉयलेट अल्वा

अमृता कौर

सुचेता कृपलानी

विजय लक्ष्मी पंडित

मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी

तीसरा क्षेत्र: शिक्षा

शिक्षा में 7 महिलाओं का विशेष योगदान रहा है । वे हैं रानी गौरी पार्वतीबाई, चंद्रमुखी बोस, कादंबिनी बोस, तय्यबा बेगम, प्रतिभा आर्य, डॉ. मेरी पूनन लुकोज, ए. ललिता और हंसा मेहता । उन्होंने गरीबी उत्थान, स्वतंत्र सोच के द्वार खोले हैं । उनके योगदान को सभी भावी युवा लड़कियों और महिलाओं द्वारा पोषित किया जाएगा। सीधे शब्दों में कहें तो वे देश में महिला शिक्षा की अग्रदूत हैं। **रानी गौरी पार्वती बाई** ने मात्र तेरह वर्ष की आयु में त्रावनकोर (वर्तमान में केरल) राज्य की राजगद्दी संभाली। राज्य में अनेक सामाजिक व प्रशासनिक सुधारों के साथ ही शिक्षा प्रणाली की स्थापना भी की। केरल में आज जो शिक्षा की उन्नत स्थिति है उसकी नींव रानी गौरी पार्वतीबाई ने ही रखी थी। **चंद्रमुखी बोस और कादंबिनी बोस** भारत की पहली महिला स्नातक हैं। परतंत्र भारत में बालिकाओं को शिक्षा का द्वार खोलने वाली इन दोनों महिलाओं ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए कार्य किया।

रानी गौरी पार्वतीबाई

चंद्रमुखी बोस

कादंबिनी बोस

डॉ. मेरी पूनन लुकोज

ए. ललिता

हंसा मेहता

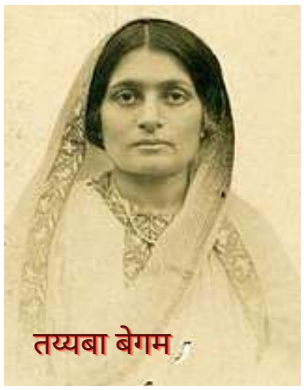
तय्यबा बेगम

चंद्रमुखी बोस, प्रथम भारतीय महिला थी जिन्होंने परतंत्र भारत में एम. ए. की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की थी। 'बुथेन कॉलेज' की महिला प्रिंसिपल बनने का गौरव भी प्राप्त है। कादंबिनी बोस के प्रयासों से ही प्रथम महिला कॉलेज 'बुथेन कॉलेज' अस्तित्व में आया था। 'प्रथम बंगाली महिला चिकित्सक' होने का श्रेय भी कादंबिनी बोस को ही प्राप्त है। **तय्यबा बेगम** पहली मुस्लिम महिला स्नातक हैं। पर्दा प्रथा का पालन करते हुए भी हैदराबाद में मुस्लिम महिलाओं के लिए शिक्षा क्षेत्र में आदर्श स्थापित किया। बालिकों के लिए विद्यालय और कॉलेज खुलवाए। तय्यबा बेगम हैदराबाद में स्थित महबूबिया गर्लस स्कूल की संस्थापक रही हैं। **प्रतिभा आर्य** भारत की प्रथम नेत्रहीन महिला स्नातक हैं। उन्होंने अंध व्यक्तियों के लिए विशेषकर अंध बालिकाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था की। **डॉ. मेरी पूनन लुकोज**, महिलाओं के लिए चिकित्सा के क्षेत्र में प्रेरक स्तंभ हैं। वे भारत ही नहीं बल्कि विश्व की प्रथम महिला सर्जन-जनरल हैं। उन्हें यह उपाधि प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयों का समाना करना पड़ा। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती गईं। **ए. ललिता** भारत की प्रथम महिला इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हैं। वे अपने पिता के प्रोत्साहन से इस क्षेत्र में आईं और अन्य महिला इंजीनियरों के लिए आदर्श स्थापित किया। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के समय वें एक बालिका की विधवा माँ थी।

समाज और शिक्षण संसाथाओं के नियमों को बदलते हुए उन्होंने यह स्थान प्राप्त किया। **हंसा मेहता,** भारत की प्रथम महिला कुलपति हैं। वे अपने समय की शिक्षा-शास्त्री, संवैधानिक प्रवक्ता और सामाजिक कार्यकत्री रही हैं। हंसा मेहता जी भारतीय समाज कल्याण की अध्यक्षा रही हैं और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जानी-मानी सक्रिय सदस्य भी रही हैं।

चौथा क्षेत्रः विज्ञान

विज्ञान में तीन प्रमुख महिलाओं का अद्भुत योगदान रहा है। वे है विश्व प्रसिद्ध कल्पना चावला, सविता रानी और डॉ. विद्या कोठेकर। **कल्पना चावला** अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थी। कल्पना जी को हवाईजहाज़ों, ग्लाइडरों व व्यावसायिक विमानचालन के लाइसेंसों के लिए प्रमाणित उड़ान प्रशिक्षक का दर्ज़ा हासिल था। उन्हें एकल व बहु इंजन वायुयानों के लिए व्यावसायिक विमानचालक के लाइसेंस भी प्राप्त थे। अंतरिक्ष यात्री बनने से पहले वे नासा की एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थीं। “वैज्ञानिक, तकनीकी और औद्योगिक विकास आवश्यक है; क्योंकि बिना इसके अध्यात्म की साधना भी मुश्किल है। भूखा आदमी कोई बात सुनने को तैयार नहीं होता न ही उससे नैतिकता की अपेक्षा की जा सकती है। लेकिन तकनीकी विकास में भी केवल विदेशों की नकल घातक है । इस विकास को हमारी सांस्कृतिक

पृष्ठभूमि पर टिकाया जाना चाहिए । ..” यह विचार **सुश्री सविता रानी** के थे जो ‘अंतरिक्ष विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय कानून’ में भारत की प्रथम महिला विशेषज्ञ थी। **डॉ विद्या कोठेकर**, प्रथम नाभिकीय भौतिकीविद् का मानना था “ राजनीति, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन आदि क्षेत्रों में प्रवेश कर नारी ने पुरुष के साथ मिलकर जीवन में विभिन्न निर्णय लेने तथा जिम्मेदारी उठाने की क्षमता हासिल की है ।..”

पाँचवाँ क्षेत्र: खेल

खेल की मनोरंजक दुनिया में भारतीय महिलाओं की अनगिनत उपलब्धियाँ रही हैं। भारतीय महिलाओं ने साहसिक और कठिन खेलों जैसे पर्वतारोहण, तैराकी, स्कीइंग, भारोत्तोलन, टेनिस आदि में कई मुकाम हासिल किए हैं। यहाँ उनमें से कुछ प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है। अति ऊर्जावान **बछेंद्री पाल** माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला है। सन 1984 में इन्होंने माउंट एवरेस्ट फतह किया था। उन्होंने 1994 में गंगा नदी में हरिद्वार से कलकत्ता तक 2,500 किमी लंबे नौका अभियान का नेतृत्व किया। हिमालय के गलियारे में भूटान, नेपाल, लेह और सियाचिन ग्लेशियर से होते हुए काराकोरम पर्वत शृंखला पर समाप्त होने वाला 4,000 किमी लंबा अभियान उनके द्वारा पूरा किया गया, जिसे इस दुर्गम क्षेत्र में प्रथम महिला अभियान का प्रयास कहा जाता है। प्रसिद्ध **कर्णम मल्लेश्वरी** भारत की महिला भारोत्तोलक हैं। वे ओलम्पिक खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली प्रथम महिला खिलाड़ी हैं। उन्हें भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार (1994) और राजीव गांधी खेल रत्न (1995) से नवाजा गया। मशहूर टेनिस प्लेयर **सानिया मिर्जा** 2003 से 2013 तक महिला टेनिस संघ (डब्ल्यू टी ए) के एकल और डबल में शीर्ष भारतीय टेनिस खिलाड़ी के रूप में अपना स्थान बनाए रखने में सफल रही। 2009 में वह भारत की तरफ से ग्रैंड स्लैम जीतने वाली पहली महिला खिलाड़ी बनीं।

साहसी करतब के लिए प्रसिद्ध **डॉ गीता घोष** पहली भारतीय महिला हैं जिन्होंने वायुयान से छतरी द्वारा उतरने का साहसिक अभियान किया था । इनके अतिरिक्त अनेक महिला खिलाड़ी हैं जिन्होंने विश्वभर में भारत का नाम रोशन किया है- दो बार एवरेस्ट-विजय करने वाली पर्वतारोही **संतोष यादव**; इंग्लिश चैनल तैरकर पार करनेवाली प्रथम भारतीय महिला **आरती साहा**; स्कींइग द्वारा दक्षिण ध्रुव की प्रथम भारतीय महिला विजेता **रीना कौशल धर्मशक्तू** आदि महिलाओं ने भारतीय बालिकाओं का खेल क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए रास्ता आसान बनाया है।

छठवाँ क्षेत्र: विविध

आश्चर्यजनक रूप से महिलाओं ने विविध क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है। इन महिलाओं ने अपनी उपलब्धियों से समाज पर एक चिरस्थायी प्रभाव छोड़ा है। यह इस बात का सच्चा प्रमाण है कि भारतीय पितृसत्तात्मक समाज की शीशे की छत टूट चुकी है। आज के युग में नौकरशाही (आईएएस, आईपीएस आदि), पुलिस बल, सशस्त्र रक्षा बल, न्यायालय, साहित्यिक क्षेत्र, व्यापार क्षेत्र और अंतरिक्ष में महिलाएँ सत्ता/प्रभाव के पदों पर पहुँच चुकी हैं। आज के समानता, पारदर्शिता के युग में हमें उन सभी पुरुषों को भी याद रखना चाहिए जो इन महिलाओं के पिता, भाई, पुत्र आदि के रूप में सुपर अचीवर के समर्थन के स्तंभ के रूप में खड़े हुए हैं। उक्त विविध क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने वाली महिलाओं के कुछ उदाहरण हैं - किरण बेदी (प्रथम आईपीएस), एयर मार्शल पद्मावती

बंद्योपाध्याय (भारतीय वायुसेना की प्रथम एयर मार्शल), अन्ना राजम जार्ज (प्रथम आईएएस), अन्ना चैंडी (प्रथम जज), सुहासिनी दासगुप्ता (प्रथम सेनाधिकारी), देविका रानी (बोलपट की प्रथम नायिका), स्वर्ण कुमारी देवी (प्रथम उपन्यासकार), कोर्नेलिया सोराबजी (प्रथम अधिवक्ता), जय चंदीराम (प्रथम टी.वी. प्रोड्यूसर), रोशन मोहन (प्रथम न्यूज रीडर), शांता कुमारी (प्रथम बैंक मैनेजर), ज्योति मेहता (प्रथम वन्य प्राणीविद), कैप्टेन प्रेम माथुर (प्रथम व्यावसायिक पायलट), धनवंती रामाराव (परिवार नियोजन कार्यक्रम में प्रथम), मार्गरेट कजिंस (मताधिकार आंदोलन की सूत्रधार), दिप्ती मोदेकर (प्रथम रेल इंजन ड्राइवर)।

मैं समझता हूँ कि इन सभी सुपर वुमन के बारे में जानना किसी भी भारतीय के लिए आश्चर्य, गर्व और सौभाग्य की बात तो होगी ही इनसे हम सभी प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। मैंने इनके बारे में पढ़ा और इस लेख के पाठकों से आग्रह करना चाहूँगा कि वे भी इनके बारे में पढ़े-जाने। मुझे विश्वास है कि आपके लिए भी यह नई और रोचक जानकारी होगी। आपके भी आत्मविश्वास में अवश्य बढ़ोत्तरी होगी। इन महान वीर नारियों के संबंध में पढ़ने के लिए आप आशारानी व्होरा द्वारा लिखित पुस्तक 'भारत की प्रथम महिलाएँ' पढ़ सकते हैं। ये भारत की महिलाएँ अवश्य ही प्रेरणा की पुंज हैं।

अंततः बस इतना ही कि - "देवी बाहर से प्रवेश नहीं करती हैं। वह भीतर गहरे से निकलती है। अतीत में जो हुआ उससे वह पीछे नहीं हटती। वह चेतना में गर्भ धारण करती है, प्रेम में पैदा होती है, और उच्च सोच द्वारा पोषित होती है। वह ईमानदारी और मूल्य है, व्यक्तिगत विकास और जीवन के अनुशासन की कड़ी मेहनत से बढ़ती और निरंतर आशा के साथ सक्रियता में जीती हैं।"

सफलतम व्यक्तियों..... पृष्ठ 23 से जारी

लोगों से सुझाव व मार्गदर्शन अवश्य लेते हैं किंतु प्रयास जारी रखते हैं।

9. बाधाओं को पार करने की क्षमता: प्रत्येक मनुष्य के जीवन में उतार-चढ़ाव, रूकावटे, पराजय आती ही है किंतु एक सफल व्यक्ति अपनी मजबूत इच्छाशक्ति, अदम्य साहस, आक्रामक रणनीति, सहनशीलता व लचीलेपन के बल पर उनसे ऊपर उठकर विफलताओं से सबक लेकर लक्ष्य की बाधाओं को पार करने की दृढ़ क्षमता पैदा करता है।

10. समय का सही प्रबंधन: सफलतम व्यक्तियों की सफलता का एक गुप्त रहस्य यह है कि वे उपलब्ध समय का सही प्रबंधन करते हैं। इसके लिए वे लोग कार्यों की सूची बनाना, प्राथमिकता तय करना, चेकलिस्ट बनाना, कार्यस्थल प्रबंधन तकनीकी, बेवजह की गतिविधियों से बचना, बुरी आदतों का त्याग, पैरेटो के 80-20 नियमों, कुछ कार्य अन्य योग्य व्यक्तियों को सौंपना जैसे उपायों का सहारा लेते हैं।

11. सुबह जल्दी उठना और व्यायाम व योग करना: स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। इसलिए सफल लोग रात को जल्दी सोते हैं और सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम व योग को नियमित दिनचर्या में शामिल करते हैं। इससे शरीर स्वस्थ रहता है तथा सकारात्मक ऊर्जा का समावेश होता है, जिससे लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता मिलती है।

12. उत्कृष्टता का ध्येय रखना: उत्कृष्टता का ध्येय रखना सफलतम लोगों के जीवन का अभिन्न अंग होता है। वे औसत स्तर से संतुष्ट न होकर अपेक्षा से अधिक सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का संकल्प रखते हैं। वे अपने ध्यान को एकाग्रचित्त रखने के साथ अपने चरित्र, कौशल, ज्ञान, प्रदर्शन व गुणवत्ता में निरंतर सुधार करते हैं तथा दूसरों से आगे बढ़कर कड़ी मेहनत को अपना ध्येय मानते हैं।

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि उपरोक्त 12 गुणों को सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन में अपनाकर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं और जीवन की किसी भी बाधा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

अग्नि के पंखवाला व्यक्ति : डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

**"सपने वो नहीं हैं जो आप नींद में देखें,
सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दे"**

अग्नि की उड़ान (विंग्स ऑफ फायर) भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की आत्मकथा है। इसके सह- लेखक अरुण तिवारी हैं। इसमें अब्दुल कलाम के बचपन से लेकर लगभग 1999 तक के जीवन के सफर के बारे में बताया गया है। मूल रुप से अंग्रेजी में प्रकाशित यह किताब, विश्व की 13 भाषाओं में अनूदित हो चुकी है, जिसमें भारत की प्रमुख भाषाएँ हिंदी, गुजराती, तेलुगु, तमिल, मराठी, मलयालम के साथ-साथ कोरियन, चीनी और ब्रेल लिपि भी शामिल हैं।

हरीश देवांगन
वरि. तक. सहा. (गुणता प्रबंधन)

अबुल पाकिर जैनुलअब्दीन कलाम (A.P.J. ABDUL KALAM) जिन्हें मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है, भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जाने-माने वैज्ञानिक और अभियंता के रूप में विख्यात थे। उन्होने सिखाया जीवन में चाहे जैसी भी परिस्थिति क्यों न हो पर जब आप अपने सपने को पूरा करने की ठान लेते हैं तो उन्हें पूरा करके ही रहते हैं।

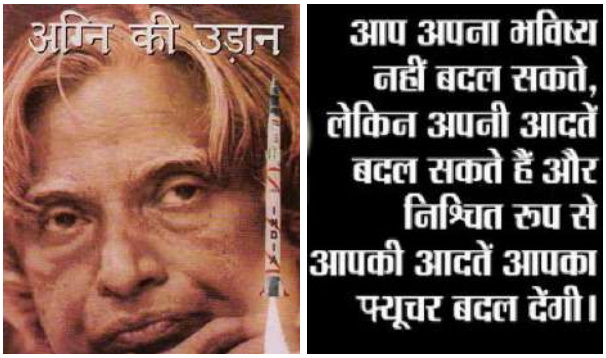

"अग्नि की उड़ान" आत्मकथा 4 भागों में विभाजित है जोकि निम्नलिखित है:-

1. सर्वेक्षण
2. सृजन
3. आराधना
4. अवलोकन

1. सर्वेक्षण (ORIENTATION): सर्वेक्षण शीर्षक से लिखा गया पहला भाग, तीन अध्यायों में विभाजित है। इसमें डॉ. कलाम के बचपन से लेकर पहले 32 वर्षों के संस्मरणों का वर्णन हैं। इन वर्षों में डॉ. कलाम के बचपन, शिक्षा और शुरूआती कार्यजीवन के बारे में बताया गया है। डॉ. कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम में मध्यम वर्गीय तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके परिवार, चचेरे भाईयों, शिक्षकों और अन्य लोगों से उन पर पड़े प्रभावों के बारे में वर्णन किया किया गया है। रामेश्वरम में प्राइमरी स्कूल में पढ़ने के बाद, डॉ. कलाम श्वार्ट्ज हाई स्कूल, रामनाथपुरम गए और वहाँ से उच्च शिक्षा के लिए सेंट जोसेफ कॉलेज, तिरुचिरापल्ली (त्रिची) गए। उनकी शिक्षा के बारे में किए गए वर्णन में वे अपने शिक्षकों और उनके साथ हुए अनुभवों के बारे में बताते हैं। सेंट जोसेफ कॉलेज से बीएससी पास करने के बाद विमान विज्ञान की पढ़ाई करने के लिए उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT) में दाखिला लिया। 1958 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। MIT से एक प्रशिक्षार्थी के रूप में वह HAL बैंगलोर गए। इसके बाद डॉ. कलाम ने डीटीडी एंड पी (DTD&P) के तकनीकी विज्ञान केंद्र (सिविल विमानन) में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के रूप में 250 मासिक मूल वेतन पर नौकरी आरंभ की। इस भाग के अंत में वे 6 महीने के प्रशिक्षण के लिए नासा, अमेरिका जाते हैं।

2. सृजन (CREATION): सृजन भाग 6 अध्यायों में हैं। अध्याय 4 से अध्याय 9 तक डॉ. कलाम के जीवन के 17 सालों (1963-1980) का वर्णन है। इस भाग में, इन वर्षों में हुए उनके काम और भारत के तकनीकी विकास की कहानी मिलती है। डॉ. कलाम इसरो में काम करने वाले एक इंजीनियर से देश की बहुचर्चित तकनीकी परियोजना, एसएलवी के प्रमुख बनते हैं। इस दौरान उनको अन्य छोटी-बडी सफलता और असफलताओं से सामना करना पडता हैं। वे न केवल उच्च अधिकारियों का वर्णन करते हैं वरन कई उभरते हुए वैज्ञानिकों के साथ हुए अनुभवों के बारे में भी लिखते हैं। 1976 में उनके पिता का देहांत होता है। 1981 में उन्हें पद्मभूषण मिलता है। इस भाग के अंत में वे डीआरडीएल (DRDL) के निदेशक के रूप मे चुने जाते हैं।

3. आराधना (PROPITIATION): इस भाग में डॉ. कलाम के जीवन के अगले 10 सालों के बारे मे लिखा गया है। यह भाग 5 अध्यायों में हैं, अध्याय 10 से अध्याय 14 तक। इस भाग में उनके द्वारा DRDL में किए गए उनके प्रबंधन संबंधी कार्यों का ज्यादा वर्णन हैं। DRDL प्रयोगशाला डॉ. कलाम के प्रबंधन के अंतर्गत आत्मविश्वास के साथ भारत की मिसाइल परियोजना का निर्माण करती है। इस भाग में वे वर्णन करते हैं कि इस काम को अंजाम देने के लिए व्यक्तियों का चुनाव वे कैसे करते हैं। उनके रास्ते में आई मुश्किलों को हल करने के लिए वे पारंपरिक शैली से हटकर नए निर्णय लेते हैं। वे शिक्षण संस्थाओं के साथ भी भागीदारी करते हैं।

4. अवलोकन (CONTEMPLATION): अवलोकन नामक अंतिम भाग में 2 अध्याय हैं, अध्याय 15 और 16। इस भाग में डॉ. कलाम के जीवन के 9 सालों (1991-1999) तक का वर्णन है। इस भाग में डॉ. कलाम अपने जीवन के अनुभवों, ज्ञान और विचारों को संकलित करते हैं। वर्ष 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित होते हैं और देश की आने वाली पीढ़ी को संदेश देते हैं।

अग्नि की उड़ान का पूरा सारांश: कलाम जी का जन्म रामेश्वरम के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। रामेश्वरम में ही उनका बचपन उनके जीजा जी और उनके साथी अहमद जलालुद्दीन के साथ बीता। अहमद उन्हें साहित्य और वैज्ञानिक शोध के बारे में बताते थे। शम्सुद्दीन भी उनके साथी थे जो उनके शहर के एकमात्र अखबार वितरक थे। कलाम जी ने इनके साथ अखबारों के बंडल उठाने का काम किया, जो उनकी पहली आय थी। फिर हायर स्कूल के लिए वो रामनाथपुरम चले गए। वहाँ उनका मार्गदर्शन अयादुरै सोलोमन ने किया जो उनके अध्यापक थे। उनके अध्यापक ने जीवन में सफल होने के लिए 3 बातों पर ध्यान देने को कहा था:- 1. ख्वाहिश 2. विश्वास 3. उम्मीद।

1950 में इंटरमीडिएट करने के बाद उन्होंने बीएससी किया। यह महसूस होने के बाद कि भौतिकी उनका विषय नहीं है, अपने सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने इंजीनियरिंग में जाने का फैसला किया। फिर उन्होंने एमआईटी (मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) में प्रवेश लिया। प्रवेश शुल्क बहुत ज्यादा था। तब उनकी बहन जोहरा ने अपने आभूषण बेचकर उनका प्रवेश शुल्क दिया था, क्योंकि उनको कलाम पर यकीन था।

एमआईटी से बीई करने के बाद वे एक प्रशिक्षु के रूप में एचएएल (हिंदुस्तान एयरोनॉटिकल लिमिटेड), बैंगलुरु गए। प्रशिक्षु के रूप में काम करने के बाद उनके पास नौकरी के 2 बड़े अवसर थे। पहला वायु सेना में कमीशन अधिकारी और दूसरा रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक। उन्होंने दोनों जगह आवेदन किया और दोनों जगह साक्षात्कार देने के बाद परिणाम कुछ इस तरह आया कि वायु सेना में 25 उम्मीदवारों में से वो 9वें स्थान पर आए और वहाँ असफल हुए, क्योंकि वहाँ सिर्फ 8 लोगों की जरूरत थी। कलाम जी बहुत निराश हुए।

दूसरे साक्षात्कार में सफल होकर उन्होंने तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय में 250/- रुपये मूल वेतन पर वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के पद पर कार्य प्रारंभ किया। कुछ सालों बाद उनका स्थानांतरण एडीई (वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान), बैंगलुरु में कर दिया गया। वहाँ पर उन्होंने नंदी परियोजना पर काम किया। इसके बाद उन्हें इंडियन कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च की तरफ से प्रस्ताव आया। वहाँ पर उनका साक्षात्कार डॉ. विक्रम साराभाई ने लिया।

कलाम साहब डॉ. विक्रम साराभाई से प्रेरित हुए और वहाँ पर रॉकेट इंजिनियर के रूप में पदस्थ हुए। सन 1962 में थुंबा में एक रॉकेट स्टेशन बनाया गया और रॉकेट लॉन्चिंग की ट्रेनिंग के लिए कलाम जी को नासा (NASA) भेज दिया गया। नासा से लौटने के बाद 1963 में हिंदुस्तान का पहला रॉकेट सफलतापूर्वक लॉन्च हुआ। इस सफलता के बाद साराभाई ने कलाम जी को अपने सपने के बारे में बताया। उनका सपना था इंडियन सेटेलाइट लॉन्च वेहिकल (एसएलवी)। थुंबा में दोनों रॉकेट सफल हुए। अगले साल साराभाई ने कलाम जी को रॉकेट की मदद से उड़ाए जा सकने वाले आरएटीओ (रॉकेट असिस्टेड टेक ऑफ सिस्टम) मिलिट्री एयरक्राफ्ट परियोजना के लिए दिल्ली बुलाया और उन्हें इस परियोजना का लीडर बनाया। इससे हमारे देश में 10 साल का अंतरिक्ष अनुसंधान तैयार हुआ, जिसके लेखक थे विक्रम साराभाई तथा साथ ही रक्षा मंत्रालय में एक मिसाइल पैनल बन गया। 30 दिसंबर 1971 को डॉ. विक्रम साराभाई का निधन हो गया।

('अग्नि की उड़ान' में प्रकाशित 22 मार्च, 2002 को डॉ. कलाम द्वारा अंग्रेजी में लिखी कविता का हिंदी अनुवाद)

कलाम जी बहुत उदास हुए क्योंकि वो उनके प्रेरणादाता और वरिष्ठ थे। कलाम जी ने उन्हें भारतीय अंतरिक्ष के पिता (FATHER OF INDIAN SPACE) की पदवी दी। इसके बाद इसरो की जिम्मेदारी सतीश धवन को दी गई तथा थुंबा परिसर में स्थित सभी संस्थानों को मिलाकर एक संपूर्ण अंतरिक्ष केंद्र बनाया गया और इसे विक्रम साराभाई अंतरिक्ष नियंत्रण (VIKRAM SARABHAI SPACE CONTROL) नाम दिया गया जो कि वीएसएससी (VSSC) के नाम से प्रसिद्ध है।

एसएलवी की लांचिग की तिथि 10 अगस्त 1979 रखी गई। कोर स्टेज का रॉकेट 7 बजकर 58 मिनट पर उड़ा। रॉकेट ने पहले स्टेज को पूरा किया और दूसरी स्टेज मे पहुँच गया। अचानक दूसरी स्टेज में कुछ खराबी आने के कारण 317 सेकंड के बाद वो असफल हो गया। टूटा गुआ रॉकेट समुंदर मे जा गिरा, जिससे पूरी टीम उदास दो गई। कलाम जी भी मायूस हो गए थे। अब डॉ. ब्रह्म प्रकाश ने उन्हें सांत्वना दी और उनका हौसला बढ़ाया। तब अखबारों ने कार्टून छापकर उनका मजाक उड़ाया था। फिर 18 जुलाई 1980 को 8 बजकर 03 मिनट पर एसएलवी ने फिर उड़ान भरी और वह सफल हुआ। गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी 1981 को उन्हें पद्म भूषण से नवाजा गया। फिर 1 जून 1982 में उन्होंने डीआरडीएल की जिम्मेदारी संभाली।

उस समय के रक्षा मंत्री आर. वेंकटरामन ने भारत के लिए रक्षा मिसाइलें बनाने को कहा। तब सतह से सतह: पृथ्वी, त्रिशुल, सतह से वायु रक्षा: आकाश, टैंकरोधी मिसाइल नाग और मध्यम रेंज की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि बनाने का निर्णय लिया गया। 1988 में पृथ्वी का परीक्षण किया गया। अग्नि मिसाइल की टीम में 500 से ज्यादा वैज्ञानिक थे। 20 अप्रैल 1989 लांचिंग की तिथि रखी गई। लांचिंग की तैयारी की गई और लांचिंग के समय आसपास के गावों को खाली कर दिया गया।

20 अप्रैल आते-आते कई देशों की नजर हिंदुस्तान पर थी और कुछ अंतरराष्ट्रीय दबाव भी था कि इस परियोजना को रोका जाए, परंतु सरकार का पूरा सहयोग था और यह परियोजना जारी रही। लांचिंग की गई और उड़ान के 14 सेकंड पहले उड़ान को रोकने का अलर्ट सिग्नल दिया गया। किसी भाग में खराबी थी, उसे वहीं ठीक कर दिया गया। लेकिन डाउनस्ट्रीम स्टेशन ने इसे रोकने का आदेश दिया और लांचिंग को स्थगित किया गया। अब अखबार वाले फिर मजाक उड़ाने लगे।

इस तरह की खबरें और आलोचना सुनने के बाद टीम पूरी तरह निराश हो गई। फिर भी परियोजना पर काम चलता रहा और कई बार असफल होने के बाद 22 मई, 1989 को अग्नि ने एक बार फिर उड़ान भरी। 5 साल के अथक परिश्रम के बाद अग्नि ने उड़ान भरी और सफल हुई।
इस किताब को पढ़ने के बाद मैंने 5 बाते जानी और सीखी हैं:

1. हमेशा बड़ा सोचो।
2. कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता, काम काम होता है।
3. अपने माता-पिता से संस्कार, सादगी और मौलिक गुण सीखना और अपने शिक्षकों का हमेशा सम्मान करना।
4. आलोचनाओं से निराश ना होना।
5. हमेशा सादगी और विनम्रता से बात करना।

"इंतजार करने वालो को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ जाते हैं"।

मेरा परिवार मेरा संघर्ष

मेरा नाम संदीप है। मैं मध्य प्रदेश के बैतुल जिले के एक छोटे से गाँव का रहने वाला हूँ। मेरे पिताजी एक किसान हैं तथा माताजी गृहिणी है। मेरी दो छोटी बहनें हैं जिनका विवाह हो गया है। बात उस समय की है जब मैं महज 4 वर्ष का था। मुझे पढ़ने के लिए पास ही स्थित मोहल्ले की पाठशाला में दाखिला करवा दिया था। कुछ समय बाद मेरे चाचाजी का विवाह हो गया। तब दादाजी ने पिताजी को घर से अलग रहकर अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए कह दिया।

संदीप पवार
कनिष्ठ तकनीशीयन (टर्नर)

मेरे पिताजी कुछ ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, उन्होंने कक्षा 5वीं तक ही पढ़ाई की थी। पिताजी को रहने के लिए एक छोटा सा कच्चा घर दे दिया गया। वह कमरा बहुत छोटा था और वर्षा होने पर उसमें पानी भी टपकता था। हमें खाने के लिए नमक, मिर्च, आटा, दाल, चावल कुछ भी नहीं दिया था। मुझे आज भी याद है, पिताजी काम की तलाश में पास ही रहने वाले एक बड़े किसान के पास गये थे और माताजी मोहल्ले में से चावल तथा कुछ मसाले माँग कर लाई थी और हमें खाना बनाकर खिलाया था। इसके बाद दोनों काम करने खेतों में चले गये। उस समय काम के बदले पिताजी को 20 रुपये और माताजी को 15 रुपये मिलते थे, जिसमें मेरे माता-पिता परिवार चलाते थे।

समय बीतता गया और कुछ महीने गुजर गए। एक दिन मैं पाठशाला से सीधे उस खेत में चला गया, जिस खेत में मेरे माता-पिता मजदूरी करने जाया करते थे। बहुत तेज वर्षा हो रही थी। मेरे माता-पिता एवं अन्य सभी लोग वर्षा में ही काम कर रहे थे। किसी के पास छाता था तो किसी के पास ओढ़ने के लिए बरसाती थी, पर मेरे माता-पिता दोनों वर्षा में भीगकर खेतों में लगी सोयाबीन की फसल में से खर-पतवार निकाल रहे थे। तभी मेरी माता मेरे पास आई और मुझे कहा बेट घर जा, छोटी बहनें घर पर अकेली हैं। बारिश थोड़ी कम हुई और मैं घर वापस आ.गया। मुझे बहुत बुरा लगा कि मेरे माता-पिता हमारे पालन-पोषण के लिए कितना कष्ट सहते हैं।

इसके पश्चात यह सिलसिला काफी दिनों तक चलता रहा और कुछ समय बाद गाँव में ही एक किसान ने हमें आधे-आधे में कृषि करने हेतु थोड़ी (1/2 एकड़) जमीन दी। उस जमीन पर मेरे परिवार के सभी लोगों ने बहुत मेहनत की और सब्जियाँ उगाने लगे। खेत के मालिक को हमारा काम पसंद आया तो उसने हमें और जमीन खेती करने के लिए दे दी। हमने जमकर मेहनत की और अच्छी फसल लगाई।

इसके बाद मैं 8वीं कक्षा की पढ़ाई करने दूसरे गाँव के स्कूल में जाने लगा था। मेरे साथ मेरी छोटी बहनें भी स्कूल जाया करती थी। हम तीनों भाई-बहन पकड़ंडी के रास्ते स्कूल जाया करते थे। कहीं छोटे नाले, कहीं जंगल तो कहीं कीचड़ हुआ करता था। समय निकलता चला गया और मैं 8वीं कक्षा में उत्तीर्ण हो गया। फिर मुझे और मेरी छोटी बहन को माता-पिता ने पढ़ने के लिए मामाजी के गाँव भेज दिया। मामाजी के गाँव से स्कूल लगभग 10 किलोमीटर दूर था। हम दोनों ने पकड़ंडी के रास्ते यह सफर 1 वर्ष तक तय किया। एक वर्ष के बाद पिताजी ने हमें एक पुरानी साइकिल दिलवा दी।

माता-पिता खेती में बहुत मेहनत किया करते थे। हमें यह देख अच्छा नहीं लगता था तो हम दोनों शनिवार को स्कूल से आकर अपने घर आ जाया करते थे और रविवार को माँ-पिताजी की खेती में मदद किया करते थे। समय गुजरता गया। दादाजी ने हमें फिर थोड़ी (1/2 एकड़) जमीन दे दी। अब माता-पिता अपनी जमीन पर ही काम किया करते थे। 10वीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद मैं वापस घर आ गया और शहर के स्कूल में दाखिला ले लिया। पढ़ाई के साथ-साथ मैं घर की कुछ सब्जियों को भी बेचा करता था।

इस तरह मैंने और पिताजी ने मिलकर सब्जियाँ बेचना आरंभ कर दिया। इसी के साथ-साथ मैंने 12वीं कक्षा भी उत्तीर्ण कर ली, पर मुझे यह नहीं पता था कि अब आगे क्या करना है। मोहल्ले के एक भैया ने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) से प्रशिक्षण के बारे में पता किया तो मैंने भी प्रशिक्षण के लिए आईटीआई में प्रवेश ले लिया। साथ ही पहले की तरह प्रशिक्षण के समय भी बचे समय में शहर में घूम-घूमकर एवं बाजारों में दुकान लगाकर सब्जियाँ बेचकर घर का खर्च चलाता था।

प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद मेरा चयन 1 वर्षीय प्रशिक्षण हेतु भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड (बीएचईएल) भोपाल में हो गया। अब मेरे जाने के बाद माता-पिता अकेले पड़ गये, फिर भी वह काम किया करते थे और सब्जियाँ बेचा करते थे। मैं भी कभी-कभी घर आ जाया करता था और मदद किया करता था। थोड़े पैसे मुझे भी मिलते थे तो खर्च के बाद बचे पैसों को पिताजी को दे किया करता था। 1 वर्ष के प्रशिक्षण के बाद मैं घर लौट आया और मेरे कुछ मित्र पढ़ाई करने के लिए शहर में ही रुक गए। इसी बीच मेरा चयन भारतीय तिब्बत सीमा सुरक्षा बल में हुआ। चूंकि मेरी पोस्टिंग हिमाचल प्रदेश में हुई थी तो मेरे माता-पिता ने मुझे जाने से मना कर दिया। उस समय मुझे भी ज्यादा ज्ञान नही था तो मैंने भी जाने के बारे मे ज्यादा नहीं सोचा।

इसके बाद मैं खेती के काम में बहुत लीन हो गया और पढ़ाई करना बिल्कुल बंद कर दिया। कुछ छह (6) महीने बाद मेरे साथ ही प्रशिक्षण करने वाले एक मित्र से बात हुई तो पता चला कि वह नौकरी पर लगा गया है। मेरा मन बहुत उदास हो गया कि मेरे मित्र का चयन कैसे हो गया। मैंने भी निश्चय किया कि अब मैं भी पढ़ाई करूंगा और सरकारी नौकरी प्राप्त करुंगा। मैंने पढ़ाई प्रारंभ की और बाजार में जब भी समय मिलता था, थोड़ा पढ़ लिया करता था।

कुछ 2 महीनों के बाद मैंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र (इसरो) बैंगलोर की परीक्षा पास कर ली। मुझे साक्षात्कार एवं प्रायोगिक परीक्षा के किए पुन: बैंगलोर जाना पड़ा किंतु कुछ कारणों से मेरा नाम प्रतीक्षा सूची में आया। तब मैंने सोचा थोड़ी और मेहनत की आवश्यकता है। इसके बाद मैंने लगातार इसरो के एलपीएसई, वीएसएससी, आईपीआरसी, एसएसी की परीक्षाएं दी और सभी परीक्षाओं में मैंने प्रथम लिखित परीक्षाएं पास की। मेरा हर बार की तरह इन संस्थानों में भी चयन नहीं हो पाया। हर बार प्रथम प्रतीक्षा सूची में नाम आ जाया करता था। इसके पश्चात मैंने रेल चालक की परीक्षा दी। उस परीक्षा में भी मेरा 0.5 अंक से चयन नहीं हो पाया। अब मैंने अस्थाई रूप से बीएचईएल, भोपाल में कार्य करना प्रारंभ कर दिया। इससे मुझे थोड़े पैसे मिल जाया करते थे, जो परीक्षा देने के लिए आने-जाने में काम आ जाते थे। ऐसे ही मैंने करीबन 5-6 वर्षों तक बीएचईएल, भोपाल में अस्थाई रूप से कार्य करता रहा। कुछ पैसे घर दे देता और कुछ अपने खर्च के लिए अपने पास में रख लेता था।

समय निकलता चला गया। इसके बाद मैंने तमिलनाडु स्थित आईपीआरसी, महेंद्रगिरी, इसरो में परीक्षा दी, जिसमें मेरे अच्छे नंबर आए थे। घर आने के बाद मैंने माता-पिता को बताया कि इस बार मेरा चयन हो जाएगा। पर इसमें भी एक समस्या आ गई। इस परीक्षा में मेरे और एक अन्य प्रतिभागी के नंबर बराबर आने के कारण मेरा महेंद्रगिरी, इसरो में भी चयन नहीं हो पाया। मैं फिर भी निराश नहीं हुआ।

मुझे खुशी थी कि मेरे माता-पिता मुझे बहुत सहारा देते थे और कहते थे कि कोई बात नहीं बेटा थोड़ी और मेहनत करो, जरूर एक न एक दिन तुम्हारी भी नौकरी लग जाएगी। मेरे लगभग 50 से 60 साथियों की नौकरी लग

चुकी थी। मैं कभी-कभी बहुत निराश हो जाता था पर मैंने अपने आप को कभी टूटने नहीं दिया।

एक दिन मैं सपरिवार मौसी के पुत्र के विवाह के लिए गया। वहाँ पर मुझे एक सुंदर कन्या पसंद आ गई और मैंने मन ही मन सोचा कि शादी करुंगा तो इसी लड़की से करुंगा। मुझे पता चला कि वह परिवार में किसी दूर के रिश्तेदार की बेटी है। उसके पिताजी सब इंस्पेक्टर थे और सेवानिवृत्त हो चुके थे। ऐसे ही बातों-बातों में उनके पिताजी से पहचान हो गई और हमने एक-दूसरे के फोन नंबर ले लिए। मैं संदेश के माध्यम से पढ़ाई के कुछ नोट्स उसे दे दिया करता था क्योंकि उसने भी आईटीआई किया था। फिर हम दोनों की बातें होने लगी और मुझे उस लड़की से स्नेह हो गया। पर मुझे पता था कि उसकी शादी उसके पिताजी किसी जॉब या नौकरी वाले लड़के से ही करवाएँगे।

हम दोनों आपस में बहुत स्नेह करते थे। दोनों ने सोचा कि जल्द ही शादी की बात करेंगे। मैंने मेरे घर पर बता दिया था और जब लड़की ने घर वालों को बताया तो नौकरी नहीं होने के कारण उसके घर वालों ने मना कर दिया। मुझे बहुत बुरा लगा पर मैं क्या कर सकता था। मुझे कोई दूसरा उपाय नहीं अपनाना था।

इसी बीच मेरा मिश्र धातु निगम लिमिटेड की परीक्षा के लिए बुलावा पत्र आ गया।

मैंने सोचा अब यह अंतिम रास्ता है। मैंने बहुत जमकर पढ़ाई की। मैं लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। इसके पश्चात मुझे प्रायोगिक परीक्षा के लिए बुलाया गया। तब भी मुझे बहुत डर लग रहा था कि इस बार भी चयन होगा या नहीं होगा। किंतु अंतिम सूची में प्रथम स्थान पर मेरा नाम आया और मेरा चयन मिश्र धातु निगम लिमिटेड, हैदराबाद में हो गया।

मिधानि में मेरे चयन के कुछ दिनों के बाद लड़की के घर वालों को यह बात पता लगी तो उन्होंने शादी के लिए घर वालों से फोन पर बात की और सगाई के लिए तैयार हो गए। अभी हाल ही में 2 महीने पहले मेरी शादी हुई है और आज मैं अपने माता-पिता और पत्नी के साथ एक खुशहाल जीवन जी रहा हूँ।

अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि -

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

काव्यकुंज

मैं उनसे कैसे पूछूँ

डॉ.बी. बालाजी
उ. प्र. (हिं.अ. एवं नि.सं.)

मैं उनसे कैसे पूछूँ कि - कैसी हैं आप ?
उन्होंने अभी-अभी
अपनी मांग का सिंदूर खोया है।

मैं उनसे कैसे पूछूँ कि - कैसी हैं आप ?
उन्होंने अभी, बस ! अभी, कुछ समय पहले
अपनी आँख का तारा टूटते देखा है।

मैं उनसे कैसे पूछूँ कि - कैसी हैं आप ?
अभी कुछ दिनों पहले ही की बात है, उन्हें
राखी बंधे हाथ के कटने का समाचार मिला था।

कद

प्रथम दसवीं कक्षा में पढ़ता था। उसकी कद-काठी अपने हमउम्र बालकों जैसी नहीं थी। वह दिखने में बहुत छोटा-नाटा-गोल-मटोल था और इस वजह से उसकी कक्षा के अन्य विद्यार्थी उसका मज़ाक उड़ाया करते थे। कभी कहते – अरे छोटू! कभी कहते – अरे नाटे! कभी तो हद कर देते – अबे गोलू-मोटू। उसका नाम प्रथम है, यह उसके सहपाठी मानों भूल ही गए थे। केवल हाज़री के समय मास्टरजी उसका सही नाम लेते थे – 'प्रथम'। अपना नाम सुनकर प्रथम बड़ा खुश होता था।

दीपक पार्थसारथी
उप प्रबंधक (मा.संसा.)

अपने नाम के अनुरूप वह बचपन से ही पढ़ाई में बहुत अच्छा था। हमेशा कक्षा में प्रथम आता था। कक्षा में अच्छा पढ़नेवाले विद्यार्थी बहुत कम थे। वे उसे अपना आदर्श मानते थे। उससे दोस्ती करना चाहते थे, लेकिन शरारती लड़कों के डर से वे भी प्रथम से कटे-कटे रहते थे। इस कारण उसके ज्यादा मित्र नहीं थे और वह अधिकतर समय अकेला ही रहना पसंद करता था।

चूंकि वह हमेशा पढ़ने में अव्वल आता था और सभी लोगों के प्रति उसका आचरण अच्छा था, उसके विद्यालय के सभी अध्यापक उसे बहुत पसंद करते थे।

एक दिन उसके जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसने उसकी सोच बदल दी। उसे झकझोर कर रख दिया। उसे जीवन में आगे बढ़ने और हिम्मत न हारने की सीख मिली। सकारात्मक सोच की शक्ति को उसने जाना। उसे एक सही दिशा मिली।

दसवीं की परीक्षा होने वाली थी। सभी बच्चे जोर-शोर से तैयारी में लगे हुए थे। वह भी अपनी तैयारियों में लगा हुआ था। अंतिम परीक्षा मार्च में होनी थी। उससे पहले जनवरी माह के अंत में मॉक परीक्षा होनी थी। इस तरह उसके विद्यालय में बच्चों को मार्च माह में होने वाले बोर्ड की परीक्षा की पूर्व तैयारी करवा लेते थे। यह परीक्षा बोर्ड की परीक्षा में सफल होने का एक कारगर अभ्यास सिद्ध होती है।

परीक्षा की तैयारी के बीच अचानक एक दिन प्रथम के सहपाठी उसकी कद-काठी को लेकर ज्यादा मज़ाक उड़ाने लगे। वह जिस बस से घर से विद्यालय और विद्यालय से घर आना-जाना करता था उस बस में भी बच्चे उसके साथ बुरा बर्ताव करने लगे। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें।

दसवीं का छात्र। 15-16 वर्ष की आयु। कोमल मन। लाख कोशिश करने पर भी अपने सहपाठियों के मज़ाक को अपने दिल पर हावी होने से बचाने में नाकाम हो रहा था।

वह स्वभाव से ही थोड़ा शर्मीला था। इसलिए झगड़े-झंझट में भी नहीं पड़ना चाहता था। वह अपनी स्थिति के बारे में अपने घर पर माता-पिता को भी नहीं बता पा रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है?

अजब सी स्थिति में फँसा था प्रथम। बच्चे पहले भी उसका मज़ाक उड़ाते और वह उनके ताने सुनने का आदी हो रहा था। वे उसे भिन्न-भिन्न नाम से बुलाकर ताने कसते थे। वह सुनकर मन मसोस कर रह जाता था। पर इस बार जब बच्चे ज्यादा मज़ाक उड़ाने लगे तो यह उसकी मानसिकता पर असर करने लगा।

वह ना तो पढ़ाई में मन लगा पा रहा था ना तो किसी अन्य कार्य में। उसे अपने आप पर गुस्सा आने लगा। चिढ़-चिढ़ा होने लगा। यहाँ तक कि क्रोध में अपने इष्टदेव को भी कोसने लगा था ' हे कृष्णा, तुमने मुझे ऐसा क्यों बनाया?', अच्छा होता मैं पैदा ही नहीं होता....., मैं मर जाऊँ तो किसे क्या फरक पड़ेगा! आदि-आदि।

प्रथम के सहपाठी उसके कद को लेकर बहुत मज़ाक उड़ाया करते थे। उस समय उसका कद करीबन चार फीट था। उसके देखने से लगता कि वह कक्षा चार या पाँच में पढ़ने वाला छात्र होगा। बचपन से लेकर कक्षा दसवीं तक उसके साथ जो कुछ हुआ चाहे वह विद्यालय हो, खेल का मैदान हो या अन्य कहीं भी, अब यह सब उसके बर्दाश्त के बाहर चला गया था और वह मानसिक रूप से तनावग्रस्त होता जा रहा था। उसकी सहनशीलता जवाब दे गई थी। अगर यह कहा जाए कि उसी मानसिक स्थिति में कुछ और दिन रहता तो शायद वह अपने आप को समाप्त कर लेता। शायद, शायद।

पर कहते हैं ना कि ईश्वर के घर में देर है पर अंधेर नहीं। उसके साथ एक घटना घटी। शायद उसके इष्टदेव ने उसके मन की बात सुन ली। हुआ यूँ कि उसे अपने विद्यालय की ओर से एक राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे पहले उसने कभी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था। .

प्रतियोगिता का परिणाम आया। प्रथम पूरे राज्य में प्रथम आया था। इस प्रतियोगिता के बारे में समाचार पत्र में भी छपा और प्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण प्रथम का फोटो भी छपा था। पूरे विद्यालय में क्या पूरे राज्य में प्रथम के नाम का डंका बजने लगा। किसी ने नहीं सोचा था कि यह छोटू अपना और अपने विद्यालय का इतना बड़ा नाम करेगा। प्रथम के माता-पिता तो खुश थे ही, विद्यालय के अध्यापक व प्राचार्य भी उसकी इस उपलब्धि पर फूले नहीं समा रहे थे, क्योंकि पूरे राज्य में विद्यालय प्रसिद्ध हो गया था।

उन्हीं दिनों प्रथम ने अपने विद्यालय में हुई साहित्यिक और खेल की विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार हासिल कर बेस्ट स्टूडेंट ऑफ द ईयर की ट्रॉफी भी हासिल की थी।

प्रथम को उसके परिवार तथा विद्यालय के प्राचार्य के साथ अभिनंदन समारोह में आमंत्रित किया गया। भव्य पुरस्कार समारोह था। उस समारोह में प्रथम को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी सिलसिले में प्रथम की अपने प्राचार्य से कुछ मुलाकातें हुईं।

प्राचार्य ने प्रथम से पूछा – बेटा, पढ़ाई कैसी चल रही है?

प्रथम ने संकोच करते हुए कहा – ठीक ठाक।

प्राचार्य ने कहा - बोर्ड की परीक्षा है। मन लगा के पढ़ाई करना। मुझे उम्मीद है कि तुम इस परीक्षा में भी अपने विद्यालय का नाम रोशन करोगे।

प्रथम को पढ़ाई के बारे में बात करने में संकोच हो रहा था। क्योंकि वही जानता था कि उसकी पढ़ाई ठीक से नहीं चल रही थी।

प्राचार्य की प्यार भरी बातें सुनकर प्रथम थोड़ा खुल गया। उसने उन्हें अपने मन की सारी बातें बता दीं, जो आज तक उसने अपने अभिभावकों को भी नहीं बताई थी। मानों वह किसी फिल्म की कहानी सुना रहा हो। उसने बताया कि कैसे उसके सहपाठी उसे चिढ़ाते हैं - अरे छोटू! अरे नाटे! अबे गोलू। अरे मोटू। वह बताते हुए कभी क्रोधित हो रहा था तो कभी दुखी। बताते-बताते रोने भी लगा। उसने यह भी बताया कि आजकल उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता है। वह मानसिक रूप से अपने आप को स्वस्थ नहीं महसूस कर रहा है।

प्राचार्य ने बड़े ही धैर्य के साथ प्रथम की सारी बातें सुनीं। उसके आवेग को शांत होने दिया। शांत होने के बाद उन्होंने प्रथम को प्यार से दुलारा। उसके सर पर हाथ फेरा। अपने गले लगाया। अपने पास बैठाकर उसके आँसू पोंछे।

प्राचार्य ने प्रथम को समझाते हुए कहा - जीवन में ऐसी कठिन परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ बहुत आएँगी। किंतु हमें उनसे घबराना नहीं चाहिए। भले ही बाकी बच्चे उसका कितना भी मज़ाक उड़ाए, ताने कसे पर जब तक वह दृढ़ रहेगा, उसे कोई भी पराजित नहीं कर सकता। तुम समझ रहे हो मैं क्या कह रहा हूँ?

प्रथम ने केवल अपना सिर हिलाया। वह अब बात करने की स्थिति में नहीं था। लेकिन प्राचार्य का प्रेम और प्रेरणादायक शब्दों से वह काफी प्रभावित हो रहा था।

प्राचार्य ने कहा – दुनिया में बहुत से लोगों का कद छोटा है। लोग मोटे भी हैं।

तब प्रथम ने बहुत देर बाद कहा – कद छोटा होने पर मुझे चिढ़ाना बहुत दुख देता है। मोटे तो कक्षा में अन्य बच्चे भी हैं। उसकी नादान और भोली बातों से प्राचार्य मुस्कुराने लगे।

प्राचार्य ने कहा - अच्छा तो तुम्हें अपने कद की वजह से दुख होता है। मैं तुम्हें बताऊँ तो तुम अचरज करोगे। दुनिया के कुछ महान व्यक्तियों का कद भी छोटा रहा है। जैसे कि - अलेक्जेंडर द ग्रेट - पूर्व में ग्रीक संस्कृति के प्रसार के माध्यम से प्राचीन दुनिया में सबसे बड़ा राजनीतिक साम्राज्य बनाया था। उसे विश्व विजेता भी कहा जाता है। छत्रपति शिवाजी महाराज – मराठा साम्राज्य के संस्थापक। पाब्लो पिकासो – 20वीं सदी का सबसे प्रभावशाली कलाकार। चार्ली चैप्लिन - उन्होंने ही मूक फिल्म को लोकप्रिय बनाया। वे एक प्रतिष्ठित चरित्र हैं। डिएगो माराडोना - अपने समय का सर्वश्रेष्ठ पेशेवर फ़ुटबॉल खिलाड़ी माना जाता है। महात्मा गांधी – विश्व में अहिंसा और सत्याग्रह के लिए प्रसिद्ध। सुनील गावस्कर और सचिन तेंडुलकर को तो जानते ही हो। और भी कई लोग हैं।

प्राचार्य बोले जा रहे थे। प्रथम मूक दर्शक बन चुप-चाप सुन रहा था। उसे आश्चार्य भी हो रहा था। क्योंकि उसके प्राचार्य जिन लोगों का नाम ले रहे थे, उन लोगों के बारे में उसने पढ़ रखा था।

प्राचार्य ने आगे कहा - ये सारे महान लोग हमेशा जीवित रहेंगे। अपने कद की वजह से अर्थात उन्होंने जो प्रसिद्धि का कद पाया है, उसकी वजह से। और हाँ, कद बढ़ाना भी नामुमकिन कार्य नहीं हैं कहकर उन्होंने प्रथम को व्यायाम करने के लिए कहा और यह भी समझाया कि भविष्य में भी लोग किसी न किसी बात पर हमारा मज़ाक उड़ाएगें, परिहास करेंगे किन्तु हमें घबराना नहीं चाहिए। हमें पहले से भी ज्यादा मेहनत करनी चाहिए और अगर हम सही पथ पर हैं तो बिना घबराए, हार माने, अपना काम करते रहना चाहिए।

प्राचार्य द्वारा प्रथम को समझाना मानो उसकी जिन्दगी की एक बहुमूल्य शिक्षा थी। उसे उनकी बातों से इतनी प्रेरणा मिली कि उसके नकारात्मक विचार पूरी तरह धुल गए। मन प्रसन्नता से भर गया।

प्राचार्य से मिलने से पहले प्रथम तनावग्रस्त और आंतरिक रूप से दुखी था, किंतु अपने प्राचार्य की बातें सुन कर अच्छा और आश्वस्त महसूस करने लगा। प्रथम ने खूब मेहनत की, लम्बे होने के लिए कई सारे व्यायाम किए उसकी कद-काठी सम्मानजनक हुई। उससे भी बढ़कर अपने प्राचार्य की उम्मीद पर खरा उतरते हुए उसने दसवीं की कक्षा में कीर्तिमान स्थापित किया। पूरे राज्य में प्रथम ने प्रथम स्थान हासिल कर अपने विद्यालय व अपने माता-पिता का नाम रोशन किया। उसे चिढ़ानेवाले लोग ही उसकी प्रशंसा करने लगे। जब वह विद्यालय अपने अध्यापकों और प्राचार्य से मिलने गया तो सहपाठी उसे बधाइयाँ देने के लिए उमड़ पड़े। उसका कद अब बढ़ गया था।

उस दिन से प्रथम ने अपने गुरु (प्राचार्य) की बातें गाँठ बाँध लीं। विद्यालय की पढ़ाई खत्म करने के बाद भी वह अपने प्राचार्य से मिलता रहा। अपने जीवन की हर समस्या व कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार होता रहा। उसने फिर जीवन में कभी हार नहीं मानी। वह सफलता की नई ऊँचाइयाँ छूने लगा।

पोस्ट मास्टर की शादी

कलाकार:

1. पोस्ट मास्टर : पी. सी. सरकार,
2. पोस्टमैन : जोरदार,
3. सरपंच : दीनानाथ,
4. पोस्ट असिस्टेंट : बिनती
5. गाँव वाला : बलिया
6.पोस्ट मास्टर : देवी लक्ष्मी

प्रतीक शर्मा
प्रबंधक (एसएमजी)

सामान की जरूरत:

साईकिल, घंटी, सेहरा/पगड़ी, माला, ट्रे, कप्स, पोस्टमैन बैग, स्टैम्प्स, VINTAGE टेलीफोन, रुमाल (शहनाई की एक्टिंग के लिए), ट्रांजिस्टर, लाठी, मेक-अप आईना, लिप्स्टिक, पैसे (नोट), शहनाई (खिलौना), शेरवानी या लम्बा कुर्ता, पोस्ट मास्टर के लिए दुपट्टा, STROLL, पुराने जमाने का कैमरा, पुराने जमाने का चश्मा।

बैकग्राउंड में शोले थीम संगीत चलता है।

सूत्रधार:

ये बात उस जमाने की है जब डाकिया यानी पोस्टमैन किसी मसीहा से कम नहीं होता था। हर किसी गाँव वाले को अपनी चिट्ठी, अपने मनी ऑर्डर का बेसब्री से इंतजार रहता था।

पोस्टमैन जोरदार बड़े जोर से साईकिल की घंटी बजा कर प्रवेश करता है।

बैकग्राउंड में गाना चलता है - डाकिया डाक लाया, डाक लाया, डाकिया डाक लाया।

चौपाल में गाँव वाले बैठे रहते हैं।

जोरदार के आने से सब खड़े हो जाते हैं और कहते हैं मेरी चिट्ठी, मेरा मनी ऑर्डर आदि-आदि।

सरकार: अबे ओ जोरदार, क्या रात को साईकिल में मेंहदी लगा के सोया था जो इतनी देरी से डाकघर आया आज। ये देख, पूरा गाँव पोस्ट ऑफिस में धरना करने को आ गया।

जोरदार: क्या बताऊँ सरकार साब, आज मधुमति मेल बड़ी लेट आई। और तो और, पार्सल वैन में बहुत सारे मुर्गे भरे थे। अपना डाक बॉक्स बड़ी लेट मिला। वर्ना SSS (जोरदार सरकार को घूरते हुए)

सरकार: वर्ना... वर्ना.... क्या.....????

जोरदार: वर्ना.... आप मुझे नहीं जानते सरकार (साईकिल की घंटी बजाते हुए)। मैं बड़ा जोरदार पोस्टमैन हूँ सरकार। मेरी रामप्यारी साईकिल मधुमति पैसेंजर मेल से भी तेज चलती है। (दर्शकों को देखते हुए) सिर्फ प्लेटफार्म पर। (और जोरदार फ्लॉप शो स्टाइल में हसने लगता है ऊ ऊ ऊ)

सरकार: (जोरदार को जोर से डाटता है, घूरता है) अबे चुप। (इतने में बिनती, जो स्टैम्प गिन रही है और सब सुन रही है, खड़े होकर सरकार को बोलती है। ट्रांजिस्टर कान में लगाते हुए)

बिनती: मैं न कहती थी सरकार जी, मेरा जोरदार बड़ा जोरदार है। लाखों में एक हीरा है हीरा। (जोरदार शर्माते हुए सरकार को देखता है)

सरकार: चुप करो दोनों, भगवान के लिए चुप करो। हे बजरंग बली, ये पोस्ट ऑफिस है या राज कपूर साब का सिनेमा थियेटर। सुन बिनती, अगर आज सारे स्टैम्प्स नहीं गिनें गए, तो तेरा ट्रांसफर वापस रामपुर पी. ओ. में करा दूँगा। वहाँ गाते रहना गाने और सुनते रहना गाने।

बिनती: नहीं SSS (चिल्लाते हुए)। वो डाकुओं वाले गाँव के पोस्ट ऑफिस मैंने नहीं जाना।

सरकार: फिर बेलगाम (नॉन स्टॉप) काम कर। कामचोरी न कर।

बिनती: आप देखते जाइए सरकार, आज बिनती की रफ्तार (स्पीड)। स्टैम्प्स तो क्या आज मैं आसमान के तारे भी गिन कर दूँगी।

जोरदार: दिन में तारे (ऊपर देखते हुए)।

सरकार: बडा मुँह चल रिया है तेरा बिनती के सामने। सब समझ आ रिया है मुझे। (बिनती जोरदार को देखकर शर्मा जाती है) अब तू देख बेटा जोरदार तेरा प्रमोशन इस जनम में तो क्या अगले सात जन्मों तक भी होने नहीं दूँगा।

जोरदार: त्राहीमान प्रभु। रहम हुजूर। ऐसा नक्को बोलो साब वरना गरीब की बद्दुआ लगेगी। सर, मैं तो कहता हूँ (बिनती को देखते हुए) इधर मेरी शादी हो और उधर आपकी शादी हो।

सरकार: हैं, आईला। ये प्रमोशन के बीच में शादी कहाँ से आ टपकी तेरी।

जोरदार: माफ करना हुजूर। मेरा मतलब था, इधर आपकी शादी हो और उधर मेरा प्रमोशन हो।

सरकार: वाह जोरदार वाह। (पी. ओ. में सब खुश हो जाते हैं) मेरी शादी में तो पूरे गाँव को दावत दूँगा। डाक घर में एक हफ्ते मीठे इत्तर (इत्र) का पोछा लगवाऊँगा। अब जाओ चिट्ठी बाँटने।

बलिया: (लाठी पकडकर आता हैं) (खाँसते हुए) पोस्ट मास्टर साब नमस्ते।

सरकार: आओ बलिया आओ और सुनाओ कइसन हो।

बलिया: प्रभु कृपा, सरकार, प्रभु कृपा। मेरा बेटा रामू चिट्ठी भेजा है पटना से। जरा पढ़कर सुना दो भैया।

सरकार: लाओ चिट्ठी। देखें क्या लिखा है नटखट ने।
प्रणाम बापू जी। मैं यहाँ ठीक हूँ, आप कईसन हैं। इस बार बारिश और फसल दोनों अच्छी हुई। ढोर डॉक्टर (VETERINARY) से गाय–घोड़ों को वैक्सीन (VACCINE) इंजेक्शन (INJECTION) भी लगवा लिए। और माँ कैसी है। हमारा चाचा पोस्ट मास्टर कैसन है। बिचारे को छड़ा छोड़ कर गये थे। छड़ा ही है या शादी–वादी किया। (सरकार सकपका जाता है।) बोलो तो घोड़े वाले एक-दो इंजेक्शन भिजवा दूँ सरकार चचा के लिए भी। (बिनती और जोरदार दोंनो सरकार को देखकर हँसते हैं। (फ्लॉप शो स्टाइल में ऊ ऊ ऊ)

सरकार: (बिनती और जोरदार को गुस्से में घूरता है।) बोलता है एक-एक को ट्रांसफर - प्रमोशन।
(दोनों जोरदार और बिनती मुँह पर हाथ रखकर चुप हो जाते हैं।)
(सरकार बलिया को देखकर चिल्लाता है। बलिया SSS ! साले बुड्ढ़े-खूसट मेरे ही पोस्ट ऑफिस में आके मेरे से ही मस्ती मजाक। क्या बहनोई समझ रखे हो। चल भाग जा यहाँ से। (सरकार बलिया की लाठी से बलिया को पीछे से मारता है) आने दे। आने दे।

बलिया: क्या आने दे। तेरी मौत का टेलीग्राम।

सरकार: आने दे एक बार तेरा मनी ऑर्डर या लैटर। फिर देखता हूँ तुझे। चल दफा हो जा यहाँ से। (एकदम से घंटी बजती हैं टेलीफोन की बैकग्राउंड में)

बिनती: सरकार जी, आपका ट्रंक कॉल आया है दिल्ली मुख्यालय से।

सरकार: लाओ बिनती। देखे जरा क्या खबर है। किसका ट्रांसफर हुआ, किसका प्रमोशन हुआ है।

हैलो। हाँ जी बिठ्ठल भैया। राधे–राधे। सरकार बोल रहा हूँ। अरे! क्या बारिश हो रही है दिल्ली में। अच्छा आपकी आवाज साफ नहीं आ रही है। थोड़ा जोर से बोलो। क्या देवी लक्ष्मी, पोस्ट मास्टर। वो भी हमारे यहाँ काशी पोस्ट ऑफिस में। (लाइन कट) ये लो। हमेशा की तरह फिर टेलीफोन कट गया आधे में ही। ये अंग्रेज भी न थोड़ा जल्दी छोड़ गए हमें।

जोरदार: (चिल्लाते हुए) सरकार ये देखो, मैं क्या लाया।

सरकार: अब क्या ले आया। नई आफत।

जोरदार: अरे आफत नहीं सरकार। आपकी शादी का निमंत्रण पत्र।

सरकार: तू फिर मजाक करने लगा सीनियर के साथ। जानता है न तेरा प्रमोशन मेरे हाथ में .....

बिनती: (सरकार को INTERRUPT करते हुए) (जोरदार से टेलीग्राम छिनते हुए) इधर दे बे टेलीग्राम। पढ़ूँ जरा क्या लिखा है। "DEVI LUXMI, POST MASTER TRANSFERRED FROM HYDERABAD P.O. TO KASHI POST OFFICE". कुछ समझे सरकार!

सरकार: नहीं तो।

बिनती: भगवान ने आपकी सुन ली। (मटकते हुए बोलती

है) सरकार आप जिसे ढूँढ़े पड़े थे जहाँ तहाँ, वो खुद आ रही मधुमति मेल में आपसे मिलने यहाँ यहाँ।

सरकार: (खुश होते हुए) (PARTY POPPER BLAST होता है। बैकग्राउंड संगीत आता है - जिंदगानी उदास है.....) (सरकार थोड़ा डांस करता है।)
लगता है बजंरग बली ने आज मेरी सुन ली। वाह! देवी लक्ष्मी, क्या नाम है। जब नाम ही इतना सुंदर है तो रूप कितना सुहाना होगा। हे भगवान! मुझे संभालो, कहीं मैं पागल ना हो जाऊँ। (खुशी से झूमने लगता है)

जोरदार: सरकार संभालिए अपने आप को। कहीं उत्तेजना से आप कुँवारे ही न मर जाईएगा। (फ्लॉप शो स्टाइल में ऊ ऊ ऊ)

बिनती: (जोरदार से) अबे चुप कर खरबूजे के बीज। तूने सरकार का गुस्सा देखा नहीं है क्या। याद है ना वो रामगढ़ ट्रांसफर वाली बात।

जोरदार: (सरकार से) माफ कीजिए हुजूर। छोटा मुँह बड़ी बात। मैं तो चला चिट्ठी बाँटने।

बिनती: वैसे सरकार! आप केवल शादी के सपने ही देखते रहेंगे या कुछ करेंगे भी।

सरकार: क्या मतलब!

बिनती: मतलब ये कि इस फटे हाल पोस्ट ऑफिस में स्वागत करोगे देवी लक्ष्मी का। नाम से तो लगता है कि बड़ी सफाई पसंद होंगी वो।

सरकार: सब समझ गया मैं बिनती। अरे कहाँ गया वो खरबूजे का बीज। जोरदार ओए।

जोरदार: जी सरकार (सकपकाते हुए)। बस मैं जाने ही वाला था ड्यूटी मतलब चिट्ठी बाँटने।

सरकार: अच्छा, सुन जोरदार। लौटते वक्त अपने साथ गाँव के सरपंच दीनानाथ को लुवालाना।

जोरदार: बस यूँ गया और यूँ आया सरकार।

(सरकार सोचता हुआ खो जाता है। उसका तो बस एक ही सपना है। किसी तरह उसकी शादी हो जाए। जब कभी मौका मिलता है-शादी के सपनों में खो जाता है।)

दृश्य दो
(घंटे भर बाद)

दीनानाथ: जय श्री राम पोस्ट मास्टर। और बताओ कैसे याद किया।

सरकार: आओ दीनानाथ। कुछ जरूरी काम था तुमसे।

दीनानाथ: वही मैं कहूँ। बिना मकसद के तो तुम भगवान को भी याद नहीं करते। बताओ क्या सेवा करें पोस्ट ऑफिस की।

सरकार: यार दीनानाथ। ये पोस्ट ऑफिस (डाक घर) बड़ा जर्जर (पुराना) हो चला है। मैं चाहता हूँ गाँव के सरपंच कोश (FUND) से स्टेशन से डाक घर तक एक पक्की सड़क बनवा दी जाए और इमारत पर थोड़ा प्लास्टर और रंग वगैहरा हो जाए।

दीनानाथ: (गंभीर होकर) ठीक है। और कुछ।

सरकार: और हाँ। बिनती जरा यहाँ आओ तो।

बिनती: जी साहब।

सरकार: मेरे और सरपंच जी के लिए दो चाय लाना नाSSS (ना पर ज्यादा जोर देते हुए)

बिनती: अभी लाई सरकार जी।

दीनानाथ: ये पोस्ट ऑफिस काशी गाँव की शान है। इतना तो मैं करा ही दूँगा।

जोरदार: (बिनती के साथ आते हुए) सरकार चाय (ट्रे में)। (फ्लॉप शो स्टाइल में हँसते हुए ऊ ऊ ऊ)

सरकार: (जोरदार को घूरते हुए) चाय लाने मैंने बिनती को अंदर भेजा था, तुम साथ में क्या कर रहे थे।

जोरदार: थोड़ा हाथ बटा रहा था सरकार।

सरकार: (जोरदार और बिनती से) याद रखो दोनों। शादी की तैयारी मेरी हो रही है। ना कि तुम्हारी।

दीनानाथ: शादी। किसकी शादी। तो क्या ये रोड और लिपाई-पुताई का काम तुम्हारी शादी के लिए करवा रहे हो सरकार। (कप हाथ में लेकर खड़ा हो जाता है)

सरकार: अरे बैठो दीनानाथ। घबराओ नहीं भई। ऐसा बिलकुल नहीं। ये सब काम तो मैं गाँव की भोली- भाली जनता के लिए करना चाहता हूँ। याद है न गांधी जी को सच्चाई, सफाई और पवित्रता कितनी पसंद थी।

दीनानाथ: तो ठीक है सरकार। सारा काम सरपट करवा दूँगा।

सरकार: शाबाश दीनानाथ। मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। और हाँ, लगे हाथ एक जनाना - मर्दाना शौचालय भी बनवा दो। (मन में बात करते हुए – अब गृहस्थी जो बढ़ने वाली है पोस्ट ऑफिस की।

दीनानाथ: गृहस्थी। क्या बड़बड़ा रहे हो सरकार मन ही मन में।

सरकार: कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं। वो तो बस ऐसे ही। दरअसल रोज डाक घर में लोग-बाग आते- जाते हैं। क्या पता किसे कब बड़े घर जाना पड़े।

दीनानाथ: ठीक है सरकार भाई। एक हफ्ते में सारा काम हो जाएगा।
(सरकार, जोरदार और बिनती खुश होकर सरपंच को विदा करते हैं।

दृश्य तीन
(एक हफ्ते बाद)

जोरदार: गजब हो गया सरकार, गजब हो गया। (हँसते हुए) देखो बिनती आज का स्वराज पेपर।
(ऊ ऊ ऊ हँसते हुए)

बिनती: दिखाओ जोरदार क्या खबर आई है।

सरकार: (जोरदार को डाँटते हुए) जरा ठीक से हँसना तो सीख लो जोरदार। क्यों सुबह से हंगामा किए रखे हो।

जोरदार: (मुंह पर हाथ रखते हुए पेपर बिनती को दे देता है।)

बिनती: आप तो बाबू मोशाय राजेश खन्ना बन गए सरकार रातों रात।

सरकार: वो कैसे बिनती। (अपना कॉलर सही करते हुए)

बिनती: ये देखो सरकार, क्या छपा है स्वराज अखबार में। "काशी गाँव डाक घर की काया पलट"। आजादी के बाद भारत के सबसे सुंदर एवं स्वच्छतम डाक घरों में से एक। ये देखो सरकार। आपका और सरपंच दीनानाथ का फोटो भी छपा है पेपर में।

सरकार: दिखाओ, दिखाओ बिनती। अरे हाँ, ये तो मैं हूँ (अपनी मूछों को ताव देने लगता है)

बिनती: (पेपर पढ़ते हुए) लिखा है, पोस्ट मास्टर पी सी सरकार और सरपंच दीनानाथ को मुख्यमंत्री द्वारा उत्तर प्रदेश विकास गौरव पुरस्कार दिया जाएगा।

जोरदार: (जोर से उचकते हुए) (बैकग्राउंड म्यूजिक में 'याहू.....चाहे कोई मुझे जंगली कहे' गाना चलता है।) सरकार, आने दीजिए कल मधुमति मेल को। आपको देखकर देवी लक्ष्मी तो क्या, साक्षात देवी काली और देवी सरस्वती भी प्रसन्न हो जाएगी। (ऊ ऊ ऊ हँसता है)

सरकार: (जोरदार को गंभीरता से घूरते हुए) (फिर सरकार जोर से हँसता है और जोरदार को गले लगा लेता है) भाई जोरदार तू तो मेरा मसीहा है रे। (राजेश खन्ना के अंदाज में) इस बार तेरा प्रमोशन पक्का है रे। (राजेश खन्ना के अंदाज में)

जोरदार: धन्यवाद सरकार जी, धन्यवाद।

सरकार: और एक बात जोरदार। (गंभीरता से बोलते हुए)

जोरदार: हाँ जी, बोलिए सरकार।

सरकार: कल हम सब और पूरे गाँव वाले स्टेशन जाएँगे देवी लक्ष्मी को लेने। (खुश होते हुए बोलता है)
(बैकग्राउंड में 'मेरे यार की शादी है' गाना बजता है)

जोरदार: बड़ा जोरदार पोस्टमैन हूँ सरकार। पूरे गाँव को स्टेशन ला लूँगा सरकार। (ऊ ऊ ऊ हँसता है और सरकार के साथ 'मेरे यार की शादी है' गाने पर डांस करता है) (सरकार भी जोरदार की तरह ऊ ऊ ऊ हँसता है और उसके साथ डांस करता है)

सरकार: बिनती सुन! (बिनती अपने आपको मेक-अप आईने में देखने और लिप्स्टिक लगाने में व्यस्त है) (सरकार उस पर चीखता है) अरे ओ बिनती, सुनती नहीं क्या।

बिनती: (सकपकाते हुए) (मेक-अप आईने और लिप्स्टिक को छुपाती हैं।) ज,ज,ज,ज, जी सरकार।

सरकार: हम अपनी होने वाली दुल्हन देवी लक्ष्मी को लेने स्टेशन जा रहे हैं। वापस आने तक पूरा डाक घर भी एक दुल्हन की तरह सज जाना चाहिए। ये लो पैसे।

बिनती: (पैसे लेते हुए) चिन्ता न करिए सरकार। सजावट का काम यूँ हो जाएगा, (चुटकी बजाती है) यूँ। मैं अभी बुलाती हूँ वो फुलवारी, मुनिया को। अरे ओ मुनिया। (कहकर बिनती चली जाती है)

दृश्य चार
(घंटे भर बाद)

(जोरदार, सरपंच दीनानाथ, गाँववाला बलिया, सरकार स्टेशन पर माला लेकर मधुमती मेल के आने का इंतजार करते हैं। बैकग्राउंड में ढोल और शहनाई बजती है)
(ट्रेन का हॉर्न सुनाई देता है)

सरकार: (बेचैन हो जाता है) जोरदार ट्रेन आ रही है। लक्ष्मी आ रही है। अरे मेरी पगड़ी दो। थोड़ा इत्र मारो। जल्दी करो।

(जोरदार सरकार को सेहरा पहनाता है। बलिया सरकार को इत्र मारता है। शहनाई का संगीत बजता है। ट्रेन का और एक हॉर्न सुनाई देता है)

(सरकार इस बार खुशी से झूमने लगता है। पागल हो जाता है।)

देखो दीनानाथ ट्रेन आ रही है, मेरी लक्ष्मी आ रही है। मेरी शादी हो रही है। मैं सेहरा पहनकर कैसा लगता हूँ दीनानाथ।

दीनानाथ: सच कहूँ सरकार। तुम किसी शहजादे से कम नही लग रहे हो।

(इंजन का हॉर्न और एक बार बजता है) (सरकार दीनानाथ और जोरदार का हाथ पकड़ लेता है बेसब्री के मारे)

जोरदार: (सरकार का हाथ झटक कर) अरे सरकार थोड़ा सब्र करिए। कहीं देवी लक्ष्मी के काशी पहुँचने से पहले हमें आपको गया धाम न ले जाना पड़े। (ऊ ऊ ऊ फ्लॉप शो स्टाइल में हँसता है) (सरकार जोरदार को घूरता है)

(जोरदार मुँह पर हाथ रख लेता है)

(अंतत: ट्रेन आती है। बैकग्राउंड में ब्रेक और ट्रेन के रुकने की आवाज आती है)

बलिया: अरे पूरी ट्रेन खाली हो गई सरकार। कहाँ है आपकी दुल्हनिया।

दीनानाथ: हाँ, हाँ। कहाँ है देवी लक्ष्मी।

सरकार: प्रिय देवी लक्ष्मी कहाँ हो तुम। अब आ भी जाओ जल्दी।

(स्टेशन प्लेटफार्म पर इंतजार कर रहे सभी लोगों के पीछे से देवी लक्ष्मी का प्रवेश होता है)

देवी लक्ष्मी: GOOD MORNING MR. P. C. SARKAR, I AM DEVI LAXMI MURUGAN SWAMY FROM HYDERABAD P.O. REPORTING चेपिण्डी।

सरकार: (होश उड़ जाते हैं) तो तुम हो देवी लक्ष्मी। (सरकार देवी को ऊपर से नीचे तक दो-तीन बार घूरता है) (सुनील दत्त के अंदाज में)

देवी लक्ष्मी: STESARIKI VACCINANDUKU DHANYA VADALU. THANKS FOR RECEIVING ME AT THE RAILWAY STATION MR. SARKAR.

(सरपंच, जोरदार, बलिया, देवी लक्ष्मी को माला पहनाते हैं और उसको डाक घर ले जाते हैं)

जोरदार: चलिए लक्ष्मी सर, अपने नए पोस्ट ऑफिस में आपका स्वागत हैं। (सब चले जाते हैं)

(सरकार अकेला स्टेशन पर जमीन पर ही बैठ जाता है। सर पकडकर, पगड़ी उतार लेता है। बैकग्राउंड में गाना चलता है 'मैं ढूँढता हूँ जिनको रातों को ख्यालों में, वो मुझको मिल सके ना सुबह के उजालों में'। सरकार रोने लगता है)

(थोड़ी देर बाद देवी लक्ष्मी सरकार के पास वापस आता है। पीछे से कंधे पर हाथ रखता है)

देवी लक्ष्मी: उठो सरकार। यहाँ मुँह फुलाए क्यों बैठे हो।

सरकार: (रोते हुए) भाई लक्ष्मी तुम नहीं समझोगे मेरे टूटे

दिल का दर्द।

देवी लक्ष्मी: क्यों भाई। (मुसकुराते हुए)

सरकार: गए थे नमाज पढ़ने....रोजे गले पड़ गए। तुम जाकर अपना चार्ज लो यार। मुझे अपने हाल पर छोड़ दो।

देवी लक्ष्मी: अरे भाई! बहुत हो गया, अब और ना रोओ। मुझे बिनती ने सब कुछ बता दिया है। खैर छोड़ों। दरअसल मेरे पास तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है।

सरकार: जब दिल ही टूट गया, हम जी कर क्या करेंगे। भला क्या करूँगा मैं खुशखबरी का। बोलो लक्ष्मी।

देवी लक्ष्मी: भाई (मुस्कुराते हुए)। सुनो तो सही। मेरी एक छोटी बहन है माला। (माला का फोटो देता है सरकार को) माला ने इसी साल काशी विश्वविद्यालय से एम.ए. (समाज कार्य) पास किया है।

सरकार: वो तो ठीक है भाई। पर इन सब से मेरा क्या वास्ता।

देवी लक्ष्मी: जब से माला ने तुम्हारी गाँव में कराए गए समाज कार्य और विकास की खबर स्वराज पेपर में पढ़ी हैं, तब से वो तुम्हारी पूजा करती है। कहती है, लक्ष्मी भैया, अगर शादी करूंगी तो केवल पी. सी. सरकार से, वरना जय माँ ब्रहमचारिणी की।

सरकार: (वापस से सिर पर पगड़ी पहन लेता है) सच में देवी लक्ष्मी। (खुश होकर पूछता है) कहीं तुम मुझसे मजाक तो नहीं कर रहे हो। (माला का फोटो अपने दिल से लगा लेता है)

देवी लक्ष्मी: सच, सोलह आने सच। (दर्शकों की तरफ चेहरा करके हँसता है) (सरकार पीछे खड़ा रहता है) अगर फिर भी तुमको एतराज है तो मैं माला को मना कर.....

सरकार: (चौंकते हुए) अरे नहीं भाई। ऐसा कभी न करना दोस्त। तुम तो मेरे लिए भगवान हो। (बैकग्राउंड में शहनाई और ढोल की आवाज आती है)

देवी लक्ष्मी: तो क्या मैं रिश्ता पक्का समझूँ सरकार।

सरकार: पक्के से भी पक्का दोस्त। एकदम हमारी दोस्ती जैसा पक्का। (दोनों एक-दूसरे को गले लगा लेते हैं) (बैकग्राउंड में 'पोस्ट मास्टर की शादी' वाला गाना चलता है। सभी कलाकार बलिया, बिनती, जोरदार, दीनानाथ, देवी लक्ष्मी आदि सरकार को घेर कर डांस करते हैं। कोई फूल फेंकता है सरकार पर, कोई कैमरे से फोटो लेता है। अंत में सरकार पगड़ी पहनकर चश्मा पहनता है और रुबाब में आकर स्टेज के मध्य में कमर पर दोनों हाथ रखकर खड़ा हो जाता है।) (शुभम्)

काव्यकुंज

नाम उसका मिधानि है

निशांक कुमार जैन
उप महाप्रबंधक (टाइटेनियम)

(1)
टाइटेनियम के एलायों का यहाँ कोई ना सानी हैं
सुपर एलाय की मजबूती की दुनिया तो दीवानी है
मराजिंग स्टील की गुणता का इसने लोहा मनवाया है
एलायों का है मंदिर, जो नाम उसका मिधानि है

(2)
वी एस एस सी और बीडीएल मिधानि के गुण गाते हैं
राफेल बोइंग वाले भी यहाँ पर मिलने आते हैं
मिधानि के एलायों-सा यहाँ कोई ना दूजा है
तरक्की की लिखी भाषा वही सबको सुनाते हैं

(3)
रक्षा मंत्रालय की गरिमा को हमें आगे बढ़ाना है
हो पूरे विश्व में भारत जय, काम कुछ ऐसा करना है
तिरंगा है हमें प्यारा, उसे सम्मान दिलाना है
मिधानि का यही नारा, की सबसे आगे जाना है

सतर्कता दिवस 2021 के समापन कार्यक्रम में 'जो न दिखे वह नहीं होता है क्या? ' नाटिका प्रस्तुत की गई। यह नाटिका बिजली की चोरी और उससे जुड़े भ्रष्टाचार पर आधारित है। पात्र काल्पनिक हैं। प्रस्तुत है एकांकी की कुछ झलकियाँ और संक्षिप्त में कथा।

बिजली विभाग का कर्मचारी पटेल बिजली की चोरी का हिसाब किताब देखते हुए।

बिजली विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भाटिया, सहायक अधिकारी उषा, दलाल शुक्ला आपस में मीटर के कमीशन की चर्चा करते हुए।

बिजली उपभोक्ता और बिजली चोर त्रिवेदी घर की सफाई करते हुए।

अपनी पत्नी के बताने पर कि बिजली का मीटर बड़ी तेजी से दौड़ रहा है, त्रिवेदी मीटर से छेड़-छाड करता है। मीटर की गति धीमी हो जाती है।

पटेल मीटर की जाँच करता है और मीटर में गड़बड़ी के पाए जाने पर उसे निकालकर अपने साथ विभाग ले जाता है। प्रभार भरकर नया मीटर लेने को कहता है।

बिजली विभाग के बाहर त्रिवेदी की भेंट दलाल शुक्ला से होती है। वह त्रिवेदी को आधे दामों पर मीटर दिलवाने की बात कहता है।

शुक्ला की बात न मानकर त्रिवेदी बिजली विभाग के अधिकारी भाटिया से मिलता है। भाटिया उसे उषा मैडम से मिलने के लिए कहता है।

त्रिवेदी उषा से मिलता है। उषा उससे बिजली की चोरी के बारे में बातचीत करती है। नए मीटर का आवेदन भरने के बदले उससे अपने घर की सब्जी कटवाती है।

उषा के कहने पर त्रिवेदी अगले दिन भाटिया से मिलने बिजली विभाग जाता है। उनसे नए मीटर की बातचीत करता है।

भाटिया, उषा और शुक्ला को बुलवाता है। वे त्रिवेदी से आगरा के पेठे, मथुरा के पेढ़े और रु.10000/- रिश्वत में देने के लिए कहते हैं।

त्रिवेदी रिश्वत देने के लिए मान जाता है। उतने में केंद्रीय सतर्कता आयोग से सतर्कता अधिकारी वहाँ पहुँच जाते हैं।

सतर्कता अधिकारी भाटिया और उषा को फटकार लगाते हैं। शुक्ला और त्रिवेदी को भी डाँट पिलाते हैं।

सतर्कता अधिकारी पटेल की सतर्कता और सत्यनिष्ठा की प्रशंसा करते हैं। उसके कारण ही वे समय पर भ्रष्ट अधिकारियों को रंगे हाथों पकड़ने में सफल होते हैं।

केवल सतर्क रहना ही जरूरी नहीं है। किसी कदाचार को होते हुए देख कर उसकी सूचना सतर्कता विभाग को देना भी एक सरकारी कर्मचारी का कर्तव्य है।

चित्र-दीर्घा

सतर्कता सप्ताह 2021 के दौरान पादयात्रा का आयोजन किया गया था। प्रस्तुत हैं कुछ झलकियाँ

अमृत महोत्सव के अंतर्गत और स्वच्छ भारत पखवाड़ा के दौरान मिधानि में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रस्तुत है कार्यक्रम की झलकियाँ।

मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा पौधा रोपते हुए

श्री डी. अत्च्युतराम दासु
महाप्रबंधक (वाणिज्यिक)

श्री डी. गोपीकृष्ण
महाप्रबंधक (उ. एवं वि.)

श्री सुपार्था सेन
महाप्रबंधक (सतर्कता)

श्रीमती के. मधुबाला
अ.म.प्र. (प्रभारी वि. एवं ले.)

श्री पी. बाबू
अ.म.प्र. (विपणन)

श्री ए.पी. राव
अ.म.प्र. (क्रय)

श्री हरिकृष्ण वी.
अ.म.प्र. (मा.संसा.)

कमांडर लक्ष्मीनाथ डी.आर.
उ.म.प्र. (विपणन)

श्री एम.पी. रमेश
उ.म.प्र. (मा.संसा.-
ईएमएस एवं कैंटीन)

श्री बेउरा बरदा प्रसाद
उ.म.प्र. (बीडी)

वित्तीय वर्ष 2020-21 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को 26 जनवरी 2022 को 'उत्तम कर्मचारी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार में एक प्रमाण पत्र और रु. 5000/- नकद दिए गए।

उत्तम महिला कर्मचारी

स्रवंति धारावत
उप प्रबंधक, आउटसोर्सिंग एवं एसबीडी

उत्तम महिला कर्मचारी

टी. लावण्या
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक, विपणन

उत्तम महिला कर्मचारी

सीएच. दिव्या
डिप्लोमा अभियंता-I, आर एंड एम (इले. पी-III)

उत्तम गैर- कार्यपालक

अशोक दास
तकनीशियन-II, टाइटेनियम शॉप

उत्तम गैर- कार्यपालक

कनकराजू चोडवरपु
वरिष्ठ तकनीकी सहायक, मशीन शॉप

उत्तम गैर-संघीय पर्यवेक्षक

कांताराव चलीमिल्ला
वरिष्ठ अभियंता-II, गुणता प्रबंधन

उत्तम कार्यपालक

सुदीप कुमार दुप्पाडा
प्रबंधक, गुणता प्रबंधन

उत्तम कार्यपालक

सैय्यद सिराज बाशा
वरिष्ठ प्रबंधक, पी-1, मेकानिकल अनुरक्षण

उत्तम कार्यपालक

आई.के. चैतन्या
प्रबंधक, सिविल

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 151वीं बैठक में 'संकल्प' के अप्रैल 2021 - सितंबर 2021 के अंक का समिति के अध्यक्ष डॉ. संजय कुमार झा सहित सभी सदस्यों ने विमोचन किया

पाठकों ने इस अंक पर अपनी प्रतिक्रियाएँ वाट्सएप, मेल तथा पत्र के माध्यम से भेजी हैं। संपादक मंडल की ओर से उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। प्रस्तुत हैं प्रतिक्रियाएँ:

सं. 5(3) / 2021- रक्षा (रा.भा.)
भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
रक्षा उत्पादन विभाग
दिनांक : 7-04-2022
मिश्र धातु निगम लिमिटेड, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित छमाही गृह पत्रिका ' संकल्प' के अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख/कविताएँ/अन्य सामग्रियाँ/जानकारियाँ अत्यंत सारगर्भित व प्रेरणादायक है। इससे न केवल हिंदी के प्रचार व प्रसार में गति आएगी, बल्कि पाठकों में रुचि भी पैदा होगी।
इस पत्रिका के प्रकाशन को बनाए रखने के लिए अच्छे लेखकों/कवियों को पुरस्कृत भी किया जाए जिससे कि और उत्कृष्ट लेख प्रकाशन के लिए मिलते रहें।
मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मिधानि, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित छमाही गृह पत्रिका 'संकल्प' के संपादक मंडल के सभी सदस्य और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य नि: संदेह बधाई के पात्र हैं।
(मनोज कुमार चौधरी)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

नमस्ते सर
संकल्प पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख और सभी कविताएँ बहुत ही सुंदर और ज्ञानवर्धक है। सभी लेखकों और कवियों को शुभकामनाएँ।
संकल्प पत्रिका का अंतरंग बहुत ही सुंदर और आकर्षक है। प्रकाशन समिति को अनेकानेक शुभकामनाएँ।
आशा करते हैं कि संकल्प पत्रिका मिधानि के संकल्प को पूरा करने में सफल हो और मिधानि देश को रक्षा के क्षेत्र में और अधिक मजबूत करें।
पुनः एक बार संकल्प पत्रिका को भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

सादर
संतोष अगाले
हिंदी अध्यापक,
डीएवी स्कूल, मिधानि, हैदराबाद

प्रियवर डॉ. बी. बालाजी,
भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ!
मिश्र धातु निगम की ई-पत्रिका 'संकल्प' का 23 वाँ अंक उपलब्ध कराने के लिए आभारी हूँ।
पत्रिका की साज-सज्जा, विषय-वस्तु और भाषा-शैली आकर्षक, स्तरीय और सहज है। हिंदी को राजभाषा के रूप में अखिल भारतीय स्वीकृति दिलाने और संवैधानिक प्रावधान को चरितार्थ करने के लिए यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक, तकनीकी और वाणिज्यिक क्षेत्रों का कामकाज हिंदी में किया जाए। भाषा के साथ जुड़ी हुई भावुकता और संवेदनशीलता को देखते हुए इस कार्य को प्रेम और प्रोत्साहन के सहारे सिद्ध करने की नीति के अनुरूप केंद्र सरकार के विविध उपक्रमों में भी राजभाषा के आयोजन धूमधाम से किए जाते हैं। 'संकल्प' का यह अंक आश्वस्त करता है कि मिश्र धातु निगम अन्य तमाम सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ हिंदी के प्रति अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी निभाने में भी अग्रणी है।
इस हेतु पत्रिका के संपादक मंडल और सहयोगी लेखकों सहित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।
शुभकामनाओं सहित
ऋषभदेव शर्मा
हैदराबाद
(युगादि पर्व: 2/4/2022)

''आजादी का अमृत महोत्सव' समारोह के अंतर्गत 13 से 19 दिसंबर 2021 तक 'मिधानि के उत्पादों की सार्वजनिक प्रदर्शनी' के दौरान स्कूली छात्रों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।
प्रस्तुत है पुरस्कृत चित्र

चि. स्वाधीन सिंह पात्रा
कक्षा - 4, बीपीडीएवी स्कूल

चि.सौ. पी श्राव्या
कक्षा - 5, बीपीडीएवी स्कूल

चि.सौ. ए. कुसुमा भवानी
कक्षा - 10, बीपीडीएवी स्कूल

चि. के. प्रजानंद रेड्डी
कक्षा - 5, बीपीडीएवी स्कूल

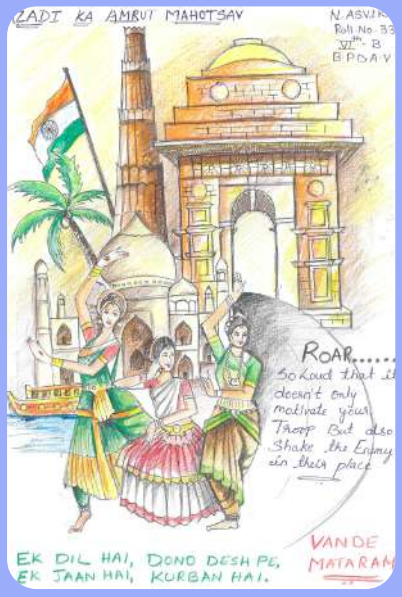

चि.सौ. एन. अश्विका कुसुमा
कक्षा - 6, बीपीडीएवी स्कूल

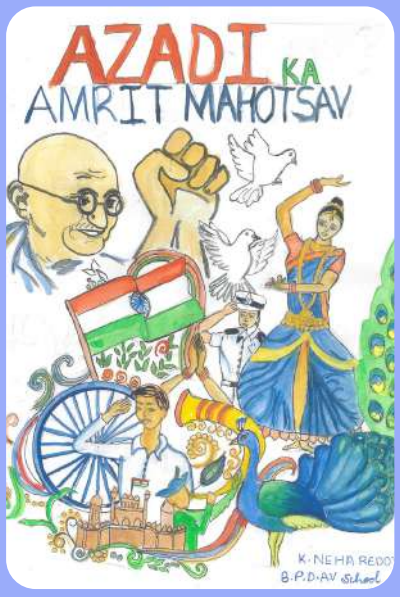

चि. सौ. के. नेहा रेड्डी
कक्षा - 10, बीपीडीएवी स्कूल

मिश्र धातु निगम लिमिटेड

MISHRA DHATU NIGAM LIMITED

(भारत सरकार का उद्यम, रक्षा मंत्रालय A Govt. of India Enterprise, Min. of Defence)

www.midhani-india.in